यात्री

मैं तो एक यात्री हूं—प्रायः मुझे अनुभव होता है, जैसे धरती पर मैं मनुष्यों में नहीं, बौनों में चल-फिर रहा हूं। मेरा सिर इनकी अपेक्षा क्योंकि सत्तर गज अधिक ऊंचा है, इसलिए इसमें इतने ही अधिक ऊंचे और उदार विचार उत्पन्न होते हैं। और जो सच पूछो तो मैं मनुष्यों में नहीं, किन्तु मनुष्यों पर चलता हूं—और वे अपने खुले खेतों में मेरे पद-चिह्नों के सिवा और कुछ भी नहीं देख सकते।

—खलील जिब्रान

यात्री

यात्री

खलील जिब्रान की 'वान्डरर' (Wanderer) का
हिन्दी अनुवाद

प्रथम संस्करण
नवम्बर, १९५६

अनुवादक
माईदयाल जैन

मूल्य
दो रुपया

मुद्रक
एलबियन प्रेस
दिल्ली.

निवेदन

'यात्री' खलील जिब्रान की प्रसिद्ध पुस्तक 'वाण्डरर' का हिन्दी अनुवाद है। यह उनकी अंतिम कृति है और उनकी मृत्यु के एक वर्ष बाद, सन् १६३२ में प्रकाशित हुई थी।

इस पुस्तक का मुख्य नायक नामहीन व्यक्ति है, जिसे 'यात्री' कहा गया है। उसके विषय में हम इस पुस्तक में पढ़ते हैं—

"मैं उसे चौराहे पर मिला। वह एक अपरिचित व्यक्ति था, जिसके हाथ में लाठी, शरीर पर एक चादर और चेहरे पर एक अथाह दर्द का अज्ञेय परदा था।

"हमारे इस मिलन में गरमी और प्रेम था। मैंने उससे कहा, 'मेरे घर पधारिए और मेरा आतिथ्य स्वीकार कीजिए।' और वह मेरे साथ हो लिया।

"इस रात और दूसरे दिन उसने हमें बहुत-सी कहानियां सुनाईं। किन्तु यह जो कुछ मैं लिख रहा हूं, यह उसके कटु दिनों का अनुभव है। ये कहानियां, उसके मार्ग की धूलि और धीरज की कहानियां हैं।"

इस पुस्तक में बावन कहानियां हैं, जिनकी तुलना जिब्रान की दूसरी दो पुस्तकों 'पागल' और 'अगुआ' की कहानियों से की जा सकती है। इन कहानियों में पूर्व के विचारों, पदों और मुहावरों का ताना-बाना है। इनमें पश्चिम की कोई चर्चा नहीं है। इनमें 'पागल' की कहानियों का व्यंग्य है। जिब्रान ने इन कहानियों में बारीक डोरियों के कोमल चाबुक से संसार के बड़े से लेकर छोटे आदमियों तक की खबर ली है और उनकी मूर्खताओं और अंधविश्वासों का परदा चाक किया

है। इस पुस्तक को शांति के लिए नहीं पढ़ना चाहिए, बल्कि बेचैनी और पापाचार के प्रति रवैये की पुष्टि के लिए पढ़ना चाहिए।

उदाहरण के लिए 'पूरे चांद' की कहानी पढ़िए। क्या इस कहानी में सभा-सोसाइटियों में शोर करनेवाली जनता से भी अधिक चिल्ला-चिल्लाकर चुप करनेवाले स्वयं-सेवकों और उपदेशपूर्ण भाषण से शोर-मचानेवाले नेताओं पर करारी चोट नहीं है?

जिब्रान जब धर्माचार्यों, सत्ता के पुजारी अधिकारियों, प्रतिष्ठाप्रिय जागीरदारों और राजनैतिक नेताओं की कथनी और करनी में आकाश-पाताल का अन्तर देखता है, तो वह झुंझला उठता है। देखिए वह 'राजा' नामक कहानी में राजा के मुख से अत्याचारी जागीरदार को किस बुरी तरह झाड़ सुनवाता है—

"परमात्मा की न्याय-तुला में एक मनुष्य की जान दूसरे मनुष्य की जान के बराबर है। पर तुम इस सत्य को नहीं पहचानते कि जो लोग तुम्हारे खेतों और तुम्हारे बागों में दिन-रात कठोर परिश्रम करते हैं, उनकी जान का भी उतना ही महत्व है, जितना कि तुम्हारी जान का। इसलिए तुम्हें देश-निकाला दिया जाता है।"

वह अत्याचार करनेवाली एक बेगम को भी इसी प्रकार खरी-खरी सुनवाकर देश-निकाले का दंड दिलवाता है।

जिब्रान इसी कहानी में एक पादरी को राजा से इन शब्दों में फट-कार सुनवाता है—

"यह जो धर्म-चिह्न—क्रास—तुम गले में लटकाए फिरते हो, जानते हो, इसका सन्देश है?—जीवन को जीवन से भरना, परन्तु तुम जीवन को जीवन से वंचित करते हो। तुम इस पवित्र सन्देश का उपहास करते हो। तुम्हें इस देश से निकल जाने की आज्ञा दी जाती है।"

जिब्रान आदमी को अंधानुकरण के हर बन्धन और गुलामी के हर झगड़े और कलंक से मुक्त देखना चाहता है।

इस 'यात्री' पुस्तक की समालोचना करते हुए, क्लाड ब्रेगडन ने लिखा था, "उसकी (खलील जिब्रान की) शक्ति किसी महान आध्यात्मिक जीवन के बड़े झरने से आती है, वरना वह इतनी विश्वव्यापी और जोरदार न होती। और जिस भाषा से उसने अपने विचारों को सजाया है, उसकी शान और सुन्दरता जिब्रान की अपनी ही है।"

हम भारतवासियों के लिए कहानियों के द्वारा शिक्षा देने की पद्धति बहुत पुरानी है। पर जिब्रान ने हमारे युग की नई-नई बुराइयों को अपनी कहानियों का लक्ष्य बनाया है, और एक नए ढंग से सच्चाई को हमारे गले के नीचे उतारने का प्रयत्न किया है। आज भारत की स्वतन्त्रता के शैशवावस्था में देश में जिन कुरीतियों, बुराइयों, रंगे सियारवाले अवसरवादियों के कारनामों, सत्तालोलुपता, समाज के दोषों, लूट-खसोट और नैतिक पतन आदि को हम देखते हैं, उनको दूर करने के लिए जिब्रान की शैली में कहानियां लिखी जाने की बड़ी आवश्यकता है। हृदय-परिवर्तन के लिए आज उपदेशों की नहीं, कड़े कानूनों की भी नहीं, वरन कोमल कोड़ों से उन आदमियों की अन्तरात्मा को हिलाने और झिंझोड़ने की आवश्यकता है, जो अपनी करतूतों से देश के लिए खतरनाक प्रमाणित हो रहे हैं। क्या हमारे लेखक और कवि जिब्रान का अनुकरण करके अपने इस महान उत्तरदायित्व को पूरा न करेंगे ?

दिल्ली
२ अगस्त, १९५६

माईदयाल जैन

Khalil Gibran

खलील जिब्रान : परिचय

संसार के महाकवियों की नामावलि में महाकवि खलील जिब्रान का नाम एक नई वृद्धि है। यद्यपि यह विश्वविख्यात और अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के थे, तो भी चूंकि इन्होंने एशिया के लेबनान देश में अपना जन्म लेकर उसे पवित्र किया था, इस नाते हम भारतवासी भी इनपर उचित गर्व कर सकते हैं। इनका जन्म ६ जनवरी, १८८३ ई० को लेबनान के बशरी नगर में एक सम्पन्न और नामी ईसाई घर में हुआ था। इनकी मां का नाम कलीमा रहीमी था।

बारह वर्ष की छोटी आयु में ही इन्हें अपने माता-पिता के साथ बेल्जियम, फ्रान्स और संयुक्त राज्य अमरीका आदि देशों में भ्रमण करना पड़ा, जिससे इनका ज्ञान और अनुभव बहुत बढ़ गया। यह अरबी, अंगरेजी और फ्रांसीसी भाषाओं के बहुत बड़े विद्वान थे, और पहली दो भाषाओं पर तो इनको इतना अधिकार प्राप्त था कि इनकी समस्त रचनाएं इन्हीं भाषाओं में हैं। यह प्रसिद्ध कवि, दार्शनिक और चित्रकार थे। अपनी रचनाओं और उग्र आलोचनाओं के कारण इनको अपने देश के पादरियों, जागीरदारों और अधिकारी-वर्ग का कोपभाजन बनना पड़ा, जिन्होंने इनको न केवल जाति से ही बहिष्कृत किया, बल्कि देश से भी निकाल दिया। इससे यह १६१२ ई० से संयुक्त राज्य अमरीका के न्यूयार्क नगर में स्थायी रूप से रहने लगे।

खलील जिब्रान अद्भुत कल्पना-शक्ति रखते थे। यह भारत के विश्वविख्यात महाकवि रवीन्द्रनाथ टैगोर की तुलना के थे। इन्होंने बारह वर्ष की अल्प आयु में ही अरबी में लिखना आरम्भ कर दिया था।

इन्होंने लगभग पच्चीस पुस्तकें लिखीं, जो इनके अपने ही बनाए हुए चित्रों से सुसज्जित हैं। इनका संसार की बीस-बाइस प्रसिद्ध भाषाओं में अनुवाद हो चुका है। अतः उनके प्रशंसकों और पाठकों की संख्या का अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है। यहां हिंदी, गुजराती, मराठी और उर्दू में उनकी बहुत-सी पुस्तकों का अनुवाद हो चुका है। यह बात उल्लेखनीय है कि उर्दू तथा मराठी में खलील जिब्रान की रचनाओं के सबसे अधिक अनुवाद प्रकाशित हुए हैं। पर यह संतोष की बात है कि हिन्दी-जगत् में भी खलील जिब्रान बहुत प्रिय बन गए हैं। उनकी कई पुस्तकों के हिन्दी अनुवाद प्रकाशित हो चुके हैं।

खलील जिब्रान एक महान् चित्रकार भी थे। और उनके चित्रों की संयुक्त राज्य अमरीका, इंग्लैंड और फ्रांस में कई प्रदर्शनियां हुईं, जिनमें प्रदर्शित चित्रों की नामी चित्र-आलोचकों ने मुक्तकंठ से प्रशंसा की थी।

यह ईसाई धर्म के अनुयायी थे, पर पादरियों और अंधविश्वासियों के सदा कट्टर विरोधी रहे। यह महान् देशभक्त थे। और अपने देशवासियों से इतने सताए जाने पर भी अपने देश के लिए सदा कुछ न कुछ लिखते रहे। अड़तालीस वर्ष की आयु में एक मोटर-दुर्घटना में यह सख्त घायल हो गए और १० अप्रैल, सन् १९३१ को न्यूयार्क में इनका देहान्त हो गया। दो दिन तक इनके शव के अंतिम दर्शनों के लिए सहस्रों आदमियों के झुंड के झुंड आते रहे। फिर इनका शव अपनी जन्मभूमि को वापस लाया गया और शान और राजसी सम्मान के साथ इनके अपने नगर के एक गिरजा घर में दफन किया गया।

'यात्री' की कहानियां

आवारा

मैं उसे चौराहे पर मिला। वह एक अपरिचित व्यक्ति था; जिसके हाथ में लाठी, शरीर पर एक चादर और चेहरे पर एक अथाह दर्द का अज्ञेय परदा था।

हमारे इस मिलन में गरमी और प्रेम था। मैंने उससे कहा, "मेरे घर पधारिए और मेरा आतिथ्य स्वीकार कीजिए।" और वह मेरे साथ हो लिया।

मेरी पत्नी और बच्चे हमें द्वार पर ही मिल गए। वे सब उससे मिलकर बहुत प्रसन्न हुए और उसके आने पर फूले न समाए।

फिर हम सब एक साथ भोजन के लिए बैठे। हम बहुत प्रसन्न थे और वह भी खुश था, किन्तु मौन। उसका मौन रहस्यपूर्ण था।

भोजन के बाद हम आग के पास आ बैठे। और मैं उससे उसकी यात्राओं की बाबत पूछता रहा।

इस रात और दूसरे दिन उसने हमें बहुत-सी कहानियां सुनाईं। किन्तु यह जो कुछ मैं लिख रहा हूं, यह उसके कटु दिनों का अनुभव है। यद्यपि वह स्वयं अत्यन्त कृपालु तथा दयालु था, परन्तु ये कहानियां! ये तो उसके मार्ग की धूलि और धीरज की कहानियां हैं।

और तीन दिन पीछे जब वह हमसे विदा हुआ तो हमें यह अनुभव नहीं होता था कि हमने किसी अतिथि को विदा किया है, वरन् ऐसा मालूम होता था, जैसे हममें से ही कोई बाहर वाटिका में गया है और उसे अभी घर आना है।

वेश

एक दिन समुद्र के किनारे सौन्दर्य की देवी की भेंट कुरूपता की देवी से हुई। एक ने दूसरी से कहा, "आओ, समुद्र में स्नान करें।"

फिर उन्होंने अपने-अपने वस्त्र उतार दिए और समुद्र में तैरने लगीं।

कुछ देर बाद कुरूपता की देवी समुद्र से बाहर निकली, तो वह चुपके-से सौन्दर्य की देवी के वस्त्र पहनकर खिसक गई।

और जब सौन्दर्य की देवी समुद्र से बाहर निकली, तो उसने देखा कि उसके वस्त्र वहां न थे। नंगा रहना उसे पसन्द न था। अब उसके लिए कुरूपता की देवी के वस्त्र पहनने के सिवा और कोई चारा न था। लाचार हो उसने वही वस्त्र पहन लिए और अपना रास्ता लिया।

आज तक सभी स्त्री-पुरुष उन्हें पहचानने में धोखा खा जाते हैं।

किन्तु कुछ व्यक्ति ऐसे अवश्य हैं, जिन्होंने सौन्दर्य की देवी को देखा हुआ है और उसके वस्त्र बदले होने पर भी उसे पहचान लेते हैं। और यह भी विश्वास के साथ कहा जा सकता है कि कुछ व्यक्ति ऐसे भी जरूर होंगे जिन्होंने कुरूपता की देवी को भी देखा होगा और उसके वस्त्र उसे उनकी दृष्टियों से छिपा न सकते हों।

उकाव और कौआ

पहाड़ी की एक ऊंची चोटी पर एक कौआ एक उकाव से मिला।

कौए ने उसका अभिवादन किया।

उकाव ने अभिमान से उसकी ओर देखा और धीरे से उसका अभिवादन किया।

कौए ने पूछा, "आशा है, श्रीमान जी कुशल से होंगे ?"

"हूं" उकाव बोला, "हम सकुशल हैं। परन्तु क्या तुम यह नहीं जानते कि हम सब पक्षियों के राजा हैं और राजा से सम्बोधन करने का साहस उस समय तक न करना चाहिए जब तक हम स्वयं ऐसा पसन्द न करें ?"

कौआ बोला, "मेरा तो विचार है कि हम सब एक कुटुम्ब से हैं।"

उकाव ने उसकी तरफ बड़ी घृणा से देखा और कहा, "यह तुझे किसने बताया है कि हम और तुम एक ही कुटुम्ब से हैं ?"

कौआ बोला, "तो फिर शायद मुझे श्रीमान को यह जतलाना ही पड़ेगा कि मेरी उड़ान श्रीमान की उड़ान से ऊंची है और मेरी बोली आपकी बोली से सुरीली है और मैं गाकर दूसरे जीवों को आनंद देता हूं और श्रीमान न किसीको

प्रसन्न कर सकते हैं और न आनन्द दे सकते हैं।"

इसपर उकाब को बड़ा क्रोध आया और उसने कहा, "प्रसन्नता और आनन्द के बच्चे ! ढीठ पक्षी। पंजा मारूं तो दम निकल जाए तेरा। मेरे पंजे के बराबर तो हो नहीं और यह हाथ भर की जिह्वा !"

इसपर कौआ उड़कर उकाब की पीठ पर आ बैठा और लगा उसके पर नोचने।

उकाब झुंझलाकर ऊंचा-ऊंचा उड़ने लगा कि किसी प्रकार इस तुच्छ पक्षी से पीछा छूटे, किन्तु कौआ ऐसा जमकर बैठा कि अन्त में हारकर उसे नीचे ही उतरना पड़ा। उकाब पहले से भी अधिक क्रोध में भर गया; उस बुरे समय को कोसता हुआ, उस तुच्छ पक्षी को अपनी पीठ पर लिए वह उसी चट्टान पर आ गिरा।

इसी समय जाने कहां से एक कछवी आ निकली और इस हंसानेवाले दृश्य को देखकर कुछ इस प्रकार से हंसी कि हंसते-हंसते लोटपोट हो गई।

उकाब ने घमंड से उसकी तरफ देखते हुए कहा, "ओ सदा से भूमि पर रेंगनेवाले कीड़े ! भला तुम्हें किस बात पर हंसी आ रही है ?"

कछवी बोली, "तुम घोड़ा बन गए हो और एक नन्हा-सा पक्षी तुमपर सवारी कर रहा है। पर यह पक्षी है तुमसे बड़ा ही।"

इसपर उकाब बोला, "अरी, तुम अपना रास्ता नापो। यह हमारी घरेलू बात है, मेरी और मेरे भाई कौए की।"

प्रेम-गीत

एक बार एक कवि ने एक प्रेम-गीत लिखा। बड़ा ही मधुर गीत था वह।

इसने उस गीत की बहुत-सी प्रतियां तैयार कराईं और उन्हें अपने मित्रों और परिचित स्त्री-पुरुषों को भिजवाया। और उस नवयुवती कुमारी को भी, जिससे आज तक वह केवल एक ही बार मिला था और जो ऊंचे पहाड़ों की उस ओर रहती थी।

इसके कुछ दिन बाद उस कुमारी का दूत एक पत्र लेकर उस कवि के पास आया। पत्र में उसने लिखा था, "मैं तुम्हें विश्वास दिलाती हूं कि प्रेम के इस गीत ने, जो तुमने लिखकर भेजा है, मुझे अत्यन्त प्रभावित कर दिया है; आप अब हमारे यहां पधारिए। एक बार मेरे माता-पिता से मिलिए और फिर हम निस्सन्देह अपनी सगाई की बातचीत पक्की कर लेने का कोई न कोई उपाय ढूंढ़ ही लेंगे।"

कवि ने इस पत्र का उत्तर उसे यों दिया, "माननीया कुमारी, यह तो केवल प्रेम का एक गीत था, जिसमें कवि के हृदय से निकले हुए उद्‌गार थे, वह गीत जो पुरुष स्त्री के लिए गाता है।"

इसके उत्तर में उस कुमारी ने लिखा, "धूर्त! मायाचारी! आज से अपनी मृत्यु के दिन तक, जीवन पर्यन्त, केवल तुम्हारे कारण मैं किसी कवि को मुंह न लगाऊंगी। मैं कवियों से सदा ही घृणा करती रहूंगी।"

मेले में

किसी गांव से एक सुन्दर लड़की मेले में आई। कहते हैं, बड़ी ही रूपवती थी वह कुमारी।

उसके चेहरे पर गुलाब के फूलों की-सी प्रफुल्लता थी। बालों में डूबते हुए सूर्य की सुनहरी किरणों की झिलमिलाहट और होठों पर उषा की मुस्कराहट।

जैसे ही मेले में वह रूपवती अनजान कुमारी दिखाई दी, नवयुवकों के झुण्ड ने उसे अपने घेरे में ले लिया। एक उसके साथ नाच रहा था, तो दूसरा उसके सम्मान में मदिरा के प्याले उलट रहा था; और उसके गुलाबी कपोलों के चुम्बन की लालसा में तो सभी व्याकुल हो रहे थे।

आखिर वे मेले ही में आए हुए थे न ?

परन्तु सुन्दर कुमारी चिन्तित थी; घबरा रही थी--नवयुवकों की भीड़ में उसका दम घुटा जा रहा था। उसे उनसे भय हो रहा था। वह उन्हें भला-बुरा कह रही थी। और एक को तो उसने एक थप्पड़ भी जड़ दिया। वह वहां से भागकर दूर चली गई।

"तोबा है, नाक में दम कर दिया !" सन्ध्या समय गांव को लौटते हुए रास्ते में वह अपने आपसे कह रही थी, "कितने असभ्य तथा अशिष्ट हैं ये नौजवान ! असहनीय हैं बाबा, ये

सब लोग !"

एक वर्ष बीत गया और वह रूपवती कुमारी वर्ष भर मेले और नवयुवकों की याद में खोई-सी रही। वर्ष भर पश्चात् वह फिर मुख पर गुलाब का-सा निखार, केशों मे डूबते हुए सूर्य की सुनहरी किरणों की झिलमिलाहट और अधरों पर उषा की मुस्कराहट लिए मेले में आई।

किन्तु अब जो नवयुवक भी उसे देखता, मुंह फेर लेता। सारा दिन बीत गया, न किसीने उसे बुलाया, न किसीने उससे बात की। वह अकेली मेले में फिरती रही।

और उस दिन सन्ध्या को गांव लौटते हुए वह अपने आपसे कह रही थी, "हाय, तोबा ! नाक में दम है। कितने अशिष्ट और बुरे हैं ये नवयुवक ! असहनीय हैं बाबा, ये सब लोग !"

दो रानियां

शिवाकस नगर में एक राजा रहता था। सभी स्त्री-पुरुष और बच्चे उससे प्यार करते थे, यहां तक कि जंगली पशु भी उसको नमस्कार करने आते थे।

किन्तु सर्वसाधारण का यह विचार था कि उसकी रानी को उससे बिल्कुल प्रेम नहीं, शायद वह उससे घृणा करती थी।

एक दिन पड़ोस के किसी राज से एक रानी शिवाकस की रानी से मिलने आई। वे देर तक एक साथ बैठी बातें करती रहीं।

बातों ही बातों में उनके पतियों—राजकुमारों की बात आ गई। शिवाकस की रानी भावुकता के आवेश में आकर बोली, "मुझे तो तुम्हारे दाम्पत्य जीवन पर इर्ष्या होती है; तुमपर और तुम्हारे पति के सुख पर भी, यद्यपि तेरे विवाह को इतना समय बीत चुका है। और एक मैं हूं। सच पूछो तो मुझे अपने पति से घृणा है। वह केवल मेरे थोड़े ही हैं! मुझ जैसी दुर्भाग्यवती स्त्री शायद ही संसार में कोई हो!"

तब अतिथि रानी ने उसकी तरफ देखते हुए कहा, "जो मुझसे सच पूछो तो केवल तुम ही अपने पति से सच्चा प्रेम करती हो, क्यों कि अभी तुम्हारे हृदय में प्यास तथा कामनाएं हैं; वे कामनाएं जिनसे स्त्री का यौवन स्थिर

रहता है, ठीक वैसे जैसे फूलों से वाटिका की सुन्दरता। किन्तु मेरी और मेरे पति की दशा दयनीय है, क्योंकि हम सन्तोष तथा धन्यवादपूर्वक एक दूसरे को केवल निबाह रहे हैं। और हमारे इस 'जीवन' पर तुम्हें और दूसरे लोगों को गुमान है—ईर्ष्या के योग्य सुख और आनन्द का !"

साधु और जंगली पशु

आज से बहुत पहले; यहां से बहुत दूर, पहाड़ों में एक साधु का मठ था। उसकी आत्मा पवित्र और हृदय प्रकाश-पूर्ण था। पृथ्वी-आकाश के सब जानदार जोड़े उसके सामने आते और वह उनसे बातें करता। वे बड़े चाव तथा प्रेम से उसकी बातें सुनते और उनमें रस लेते, उसके गिर्द इकट्ठे रहते। सूरज छिपे वह साधु उन्हें अपने आशीर्वाद के साथ जंगल में भेज देता।

एक संध्या को जब वह प्रेम के विषय में बातचीत कर रहा था, एक शेरनी ने अपना सिर उठाया और साधु से पूछा, "महाराज आप हमसे तो प्रेम की कहानियां कह रहे हैं, किन्तु आपकी अपनी प्रेमिका कहां है ?"

साधु बोला, "मेरी कोई प्रेमिका नहीं है।"

इसपर पशु-पक्षियों तथा जंगली जानवरों के इस झुण्ड में आश्चर्य की एक लहर दौड़ गई। अब उसकी कोई नहीं सुनता था। सब अपनी ही हांके जाते थे। वहां बहुत शोर हो गया।

"यह हमें प्रेम करने का..."

"घर बसाने का उपदेश क्योंकर दे सकता है, जब इसने स्वयं न कभी प्रेम किया है, न घर ही बसाया है ?"

इस घृणा में वे सब उसे अकेला छोड़कर चल दिए, और उस रात साधु चटाई पर औंधा पड़ा रोता और अपनी छाती पीटता रहा।

पैगम्बर और बच्चा

एक दिन सारियारसूल एक बाग में एक बच्चे से मिले। बच्चा भागकर उनके पास आ गया और अभिवादन किया।

पैगम्बर ने अभिवादन का उत्तर देते हुए कहा, "बच्चे, आज मैं देखता हूं कि तुम अकेले हो।"

बच्चे ने खुशी से खिलखिलाते हुए कहा, "अपनी धाया को खोने में मुझे एक युग लगा है! वह समझ रही है कि मैं झाडियों के इधर हूं और आप देख रहे हैं कि मैं यहां हूं।" फिर उसने पैगम्बर के मुंह की तरफ देखते हुए पूछा, "मगर आप भी तो अकेले हैं। आपकी धाया क्या हुई?"

पैगम्बर बोले, "यह एक अलग किस्सा है। सच पूछो तो मैं प्रयत्न करूं तो भी उसे खो नहीं सकता। हां, जब मैं इधर आया था, तो वह झाडियों के उधर मेरी तलाश कर रही थी।"

बच्चे ने खुशी से ताली बजाते हुए कहा, "तो फिर आप भी मेरे समान खोए हुए हैं ना? आहा! क्या मजा है यों खो जाने में भी!" और फिर पूछने लगा, "परन्तु आप कौन हैं?"

"मुझे कहते हैं, सारियारसूल। और तुमने भी तो मुझे नहीं बताया कि तुम कौन हो?" पैगम्बर ने पूछा।

"मैं ! मैं सिर्फ मैं हूं" बच्चे ने उत्तर दिया, "और धाया मुझे ढूंढ रही है। वह धाया जिसे पता ही नहीं कि मैं कहां हूं ?"

पैगम्बर ने बच्चे के चेहरे की तरफ देखते हुए कहा, "मैं भी पल भर के लिए अपनी धाया से भाग आया हूं, पर वह शीघ्र ही मुझे ढूंढ लेगी।"

"यह तो मुझे भी मालूम है कि मेरी धाया मुझे अन्त में ढूंढ ही लेगी।" बच्चे ने कहा। इसी समय एक स्त्री की आवाज सुनाई दी, जो उस बच्चे का नाम लेकर उसे पुकार रही थी।

"देखा!" बच्चा बोला, "मैं आपसे कहा नहीं था कि वह मुझे ढूंढ रही है ?"

और उसी समय एक और आवाज सुनाई दी, "कहां हो तुम सारिया !"

पैगम्बर बोले, "देखा न मेरे बच्चे ! आखिर उन्होंने मुझे भी ढूंढ ही लिया न ?" और चेहरे को ऊपर उठाते हुए धीरे से कहा, "यहां हूं मैं !"

आत्मा और शरीर

वसंत के दिन थे। एक पुरुष और एक स्त्री दोनों एक साथ खिड़की के पास बैठे थे। खिड़की बाग में खुलती थी।

वे दोनों एक दूसरे के बहुत ही पास बैठे थे। स्त्री बोली, "मुझे तुमसे प्रेम है, क्यों कि तुम जवान हो, धनवान हो और सुन्दर वस्त्र पहने हो।"

"मैं भी तुमसे प्रेम करता हूं, क्यों कि तुम एक सुन्दर स्वप्न हो, एक ऐसी सूक्ष्म कल्पना हो जो छूई नहीं जा सकती–तुम मेरे मधुर स्वप्नों का रसीला गीत हो।" पुरुष भावुकता के प्रवाह में कहने लगा।

स्त्री जलकर अलग हो गई और कहने लगी, "तुम मुझसे दूर ही रहो तो बड़ी कृपा होगी; न तो मैं कोई मरीचिका हूं, और न कोई ऐसी सुकोमल कल्पना हूं जिसका जादू तेरी छोटी-सी छेड़ से टूटफूट जाए या जो तुम्हारे स्वप्नों से सम्बन्धित हो। मैं स्त्री हूं और यह मेरी इच्छा थी कि तुम मुझे अपनी पत्नी बनाते और अपने भावी बच्चे की मां।"

और वे दोनों एक दूसरे से अलग हो गए। पुरुष अपने मन में कह रहा था, "लो देखो, एक और सुन्दर स्वप्न बस कल्पना बनकर रह गया।" और स्त्री कह रही थी, "इस पुरुष का क्या है, जो मुझे तथा मेरी इच्छाओं को सिर्फ स्वप्न तथा कल्पना बना देना चाहता है।"

राजा

सादिक राज्य के भड़के हुए विद्रोहियों ने राजमहल को घेर रखा था। वे राजा के विरुद्ध नारे लगा रहे थे।

राजा एक हाथ में राजमुकुट और दूसरे हाथ में राज-दण्ड लिए महल की सीढ़ियों से उतर आया।

विद्रोहियों की भीड़ में खामोशी छा गई। राजा जनता के सामने खड़ा था और कह रहा था—

"मेरे मित्रो, जो अब मेरी प्रजा नहीं हो ! लो ! यह लो ! अपना राजमुकुट और राजदण्ड। मैं इन्हें अब तुम्हारे हवाले करता हूं। मैं अब तुममें से एक बनूंगा। यद्यपि मैं अकेला हूं, किन्तु मैं तुम्हारे समाज के एक व्यक्ति के समान तुम्हारे साथ काम करने के लिए तुमसे पहल करूंगा। हम सब मिलकर काम करेंगे, जिससे हमारी दशा सुधर सके। अब राज की कोई आवश्यकता नहीं रही है। हम सब एक साथ मिलकर खेतों तथा बागों में परिश्रम करेंगे। तुम मुझे केवल इतना बता दो कि मुझे किस खेत में या किस बाग में काम करना है। अब तुम सब राजा हो।"

प्रजा अपनी इस सहज जीत पर प्रसन्न तो थी, किन्तु एक अजेय स्तब्धता इनपर छा गई थी। अब वह राजा अपना

राजमुकुट और राजदण्ड उनको सौंप चुका था, जिसके विरुद्ध वे विद्रोह कर उठे थे और जिसे वे अपने सब दुःखों का कारण समझते थे।

वह उनमें से एक बन गया।

फिर वे सब अपनी-अपनी राह पर हो लिए, और राजा भी किसी एक के साथ किसी एक खेत को चल दिया।

सादिक राज्य की दशा राजा के बिना भी न सुधर सकी। बेचैनी अब भी फैली हुई थी। बाजारों तथा चौराहों में लोग चिल्ला उठे, "हमें राज्य-शासन चाहिए।"

"हम राजा का राज चाहते हैं।"

"हम अपने लिए एक राजा चाहते हैं।" बूढ़े और जवान सब एक साथ मिलकर चिल्लाते थे।

"हम अपने राजा को वापस लाएंगें।"

उन्होंने राजा को ढूंढना आरम्भ किया। राजा उन्हें एक खेत में मेहनत करता मिल गया। वे उसे राजमहल में ले आए और राजमुकुट और राजदण्ड उसके चरणों में रख दिया। हाथ जोड़कर सब उसके सामने खड़े हो गए और कहने लगे—

"महाराज, अब हमपर राज्य कीजिए पूरी शक्ति के साथ, पूरे न्याय के साथ!"

राजा ने उत्तर दिया, "हम अपनी पूरी शक्ति के साथ राज्य तो करेंगे, मगर हां, आकाश-पाताल का स्वामी ऐसा भी करे कि हम न्याय भी कर सकें।"

फिर प्रजा के स्त्री-पुरुष उसके दरबार में एक बड़े जागीर-दार की शिकायत लेकर आए जो अपने कर्मचारियों पर बहुत

अत्याचार करता था।

राजा ने उसी क्षण उस बड़े जागीरदार को बुलवाया और उसपर टूट पड़ा, "परमात्मा की न्याय-तुला में एक मनुष्य की जान दूसरे मनुष्य की जान के बराबर है। पर तुम इस सत्य को नहीं पहचानते कि जो लोग तुम्हारे खेतों में, तुम्हारे बागों में, दिन-रात कठोर परिश्रम करते हैं, उनकी जान का भी इतना ही महत्व है, जितना कि तुम्हारी जान का। इसलिए तुम्हें देश-निकाला दिया जाता है। तुम्हें यह देश सदा के लिए छोड़ देना होगा।"

अगले दिन एक और भीड़ एक ऐसी बेगम की शिकायत दरबार में लकर आई जो पहाड़ों से उस तरफ रहती थी और जिसके अत्याचारों से वे सब दुखी थे।

बेगम को भी उसी समय बुलाने की आज्ञा दी गई। राजा ने उसे भी देश-निकाले की सजा देते हुए कहा, "जो हमारे खेतों में हल चलाते हैं और हमारे अंगूरों की रक्षा करते हैं, वे हमसे अच्छे हैं, क्यों कि हम उनका पैदा किया हुआ अन्न खाते हैं और उनकी बनाई हुई मदिरा पीते हैं। किन्तु तुममें यह भाव नहीं है, इसलिए तुम्हें इस देश को छोड़ना होगा, यहां से कहीं दूर जाकर रहना होगा।"

फिर कुछ मर्द-औरतें उसके दरबार में रोते-चिल्लाते आए, "महाराज, पादरी हमें गिरजे के बड़े-बड़े पत्थर ढोने और तराशने पर विवश तो करता है, पर मजदूरी के पैसे नहीं देता, यद्यपि उसकी तिजोरी सोने और चांदी से भरी हुई है और हमारे पेट भूखे हैं।"

पादरी के नाम भी परचा जारी हो गया और जब वह दरबार में पेश हुआ, तो बादशाह झल्ला उठा, "जो धर्म-चिह्न--क्रास तुम गले में लटकाए फिरते हो, जानते हो उसका सन्देश है जीवन को जीवन से भरना, परन्तु तुम जीवन को जीवन से वञ्चित करते हो : तुम इस पवित्र सन्देश का उपहास करते हो। तुम्हें इस देश से निकल जाने की आज्ञा दी जाती है। तुम्हें कभी यहां लौटकर न आने दिया जाएगा।"

यूं ही, ठीक इसी प्रकार, पूरा महीना भर प्रतिदिन स्त्री-पुरुष अपने-अपने दुःखों का रोना रोते इसके पास आते रहे और राजा अत्याचारों के बदले में अत्याचारियों को देश से निकालता रहा।

सादिक राज्य की प्रजा प्रसन्न थी, उनके हृदय शान्त थे।

एक दिन सादिक राज्य के स्त्री-पुरुष, वृद्ध-युवक अपने राजा के महल के आसपास फिर इकट्ठे हो गए। उन्होंने अपने राजा के महल को घेर लिया।

राजा एक हाथ में राजमुकुट और दूसरे में राजदण्ड लिए फिर महल की सीढ़ियों से उतर आया और कहने लगा, "अब तुम हमसे और क्या चाहते हो ? लो, हम तुम्हें वह सब कुछ लौटाते हैं, जिसे सम्भालने की तुमने हमसे प्रार्थना की थी।"

"नहीं, नहीं, महाराज !" वे गिड़गिड़ाने लगे, आप हमारे राजा हैं। आपने हमारे लिए इस भूमि को डॅसनेवाले सांपों और खून चूसनेवाले भेड़ियों से मुक्त कर दिया है। हम तो आपके गुण गाने, आपकी महानता के गीत गाने

आए हैं। यह राजमुकुट अपनी सब बड़ाई के साथ आपका है और यह राजदण्ड भी अपने पूरे सौभाग्य के साथ श्रीमान का ही है।"

महाराज ने कहा, "हम नहीं, तुम सब बादशाह हो। जब तुमने हमें निर्बल पाया और हमारे शासन को त्रुटिपूर्ण, उस समय तुम स्वयं भी निर्बल और त्रुटिपूर्ण थे। अब जनता सुखी है तो यह भी तुम्हारी ही इच्छा है। मैं तो केवल तुम्हारा विचार हूं, तुम्हारे मस्तिष्कों की महान् कल्पना! और मेरा अस्तित्व तुम्हारे अपने कामों के सिवा कुछ भी नहीं है। शासक का तो कोई अस्तित्व ही नहीं, केवल जनता अपने आपपर शासन करने के लिए जीवित है।"

राजा ने अपने राजमुकुट और राजदण्ड के साथ एक बार फिर महल में प्रवेश किया और सादिक राज्य के बूढ़े और जवान खुशी-खुशी अपने आपको राजा समझते हुए अपने-अपने रास्ते पर हो लिए। वे अनुभव कर रहे थे जैसे सचमुच उनमें से हर एक के एक हाथ में राजमुकुट है और दूसरे में राजदण्ड।

तीन भेंटें

बसारे शहर में कभी एक बहुत ही दयालु राजकुमार रहता था। सारी प्रजा उसे प्यार करती थी और सब ही उसका हृदय से आदर करते थे।

परन्तु इसी शहर में एक निर्धन दुष्ट आदमी भी रहता था। उसे राजकुमार से बड़ी घृणा थी। और वह सदा उसके विरुद्ध विष उगलता रहता था।

राजकुमार के कानों तक यह सब कुछ पहुंच तो जाता था, पर फिर भी वह चुप रहता।

अन्त में उसने उसका यह उपाय निकाला कि शीतकाल की एक ठंडी रात में अपने एक दास को आटे की एक बोरी, साबुन का गट्ठा और शक्कर की एक बोरी देकर उस दुष्ट के यहां भेजा।

दास ने जाकर उससे कहा, "राजकुमार ने यह सब कुछ श्रीमान की सेवा में भेजा है।"

वह दुष्ट यह सुनकर फूल उठा और यह समझकर इतराया कि राजकुमार ने उसे भेंटें भेजी हैं। इसी घमण्ड में वह पादरी के पास पहुंचा और राजकुमार की भेंटों का ब्यौरा बताकर कहने लगा, "देखा न आपने। राजकुमार को भी मेरी प्रसन्नता का कितना ख्याल है!"

पादरी यह सुनकर मुस्कराया, और कहने लगा, "हां, मैंने देखा है कि कितना बुद्धिमान है वह राजकुमार और कितने मूर्ख हो तुम। परन्तु कुछ तुम भो समझे कि वह संकेतों में बातें करता है? आटे की बोरी तेरे खाली पेट के लिए है, साबुन तेरे मैले कपड़ों को उजला करने के लिए और शक्कर तेरी कड़वी बातचीत को मीठा बनाने के लिए है।"

उस दिन से उस दुष्ट को स्वयं अपने आपसे घृणा हो गई। परन्तु राजकुमार के विरुद्ध जो मैल उसके मन में था, उसकी तेजी पहले से भी बढ़ गई। और उस पादरी को तो वह विष की गांठ समझने लगा, जिसने राजकुमार की बड़ाई का रहस्य इसपर प्रकट किया था।

पर कहते हैं, इसके पश्चात् उस दुष्ट ने अपनी जिह्वा से राजकुमार के विरुद्ध कभी कुछ नहीं कहा।

शांति और युद्ध

तीन कुत्ते धूप में बैठे गप्प लड़ा रहे थे।

एक कुत्ते ने ऊंघते हुए, दूसरे कुत्ते से कहा, "आज कुत्तों के संसार में रहना भी क्या विलक्षण बात है ! देखो तो, हम किस आनंद से बिना झिझक हवा में, पानी में और भूमि पर चल-फिर सकते हैं। और जरा इन अविष्कारों पर भी तो विचार करो, जो केवल हमारे आराम के लिए बनाए गए हैं, हमारी नाक, कान और आंख के लिए।"

दूसरा कुत्ता बोला, "मेरे विचार में हममें सौन्दर्य की अनुभूति बहुत बढ़ गई है। हम चांद पर अपने बाप-दादे से कहीं अच्छे ढंग से भौंकते हैं। और जब अपनी आकृति की परछाईं पानी में देखते हैं, तो उसे कल से सुन्दर पाते हैं।"

तीसरे कुत्ते ने कहा, "परन्तु भाई, जो संतोष और आनन्द मुझे कुत्तों के विचार-साम्य से होता है, वह किसी और वस्तु से नहीं मिलता।"

जैसे ही उसने यह कहा, तो क्या देखते हैं कि कुत्तों का शिकारी चला आ रहा है। बस फिर तो भागे सब कुत्ते दुम दबाकर। जब तीनों कुत्ते बहुत जोर से भाग रहे थे, तीसरे कुत्ते ने चिल्ला-चिल्लाकर कहा, "अरे भाई, परमात्मा के लिए अपनी जान बचाकर निकल जाओ क्योंकि सभ्यता हमारा पीछा कर रही है।"

नर्तकी

एक बार विरकशा के राजकुमार के दरबार में एक नर्तकी बहुत से गवैयों के साथ उपस्थित हुई। उसने अपना नाच इस अन्दाज से पेश किया कि उसके शरीर की प्रत्येक गति, लचक शहनाई, बरवत तथा छहतारे प्रत्येक बाजे के साथ समलीन हो गई।

उसने चिंगारियों का नृत्य किया, तलवारों और बल्लमों का नाच दिखाया, जमाने और घर का नाच पेश किया और तारों का भी।

और फिर उसने फूलों का नृत्य भी दिखाया; उसमें ऐसे पुष्प दिखाए, जिन्हें वायु अपनी लपेट में लिए उड़ रही हो।

नृत्य के पश्चात् वह राजकुमार के तख्त के सामने हाथ बांधकर खड़ी हो गई और अपना सिर झुका दिया।

राजकुमार ने नर्तकी को अपने पास आने का गौरव प्रदानकर उससे कहा, "ऐ सुन्दरी ! ऐ मस्ती और सौन्दर्य की मूर्ति ! तूने यह जादू कहां से सीखा है ? तूने अपने गायन और सजावट से प्रकृति को भी मोह लिया।"

नर्तकी घुटनों पर बैठकर बोली, "हे महान सौभाग्यशाली राजकुमार, मुझमें यह बुद्धि कहां कि मैं आपके प्रश्नों का उत्तर दे सकूं ? परन्तु मैं इतना अवश्य जानती हूं कि

यदि एक तत्वज्ञानी का प्राण उसके मस्तिष्क में, कवि का प्राण उसके हृदय में, सुवक्ता का प्राण उसके कण्ठ तथा वाणी मे रहता है, तो नर्तकी का प्राण उसके शरीर के अग-प्रत्यंग में बसता है।"

दो संरक्षक देव

नगर के द्वार पर एक संध्या को दो देव मिले। कुशल-प्रश्न के पश्चात् एक देव ने दूसरे देव से पूछा, "क्यों भाई, कैसे गुजर रही है ? किस काम में लगे हो आजकल ?"

"क्या कहूं तुमसे," दूसरा बोला, "मेरे जिम्मे दूर नीचे तलहटी में बसनेवाले एक ऐसे व्यक्ति की देखभाल का काम है जो अत्यंत पापी और दुराचारी है। और यह काम ऐसा कठिन है कि तुम शायद ही अनुमान कर सको। बस, यही समझो कि दिन-रात जान मार रहा हूं।"

"यह तो सरल-सी बात है," पहले ने कहा, "मुझे प्रायः पापियों से काम पड़ा है। कई बार बड़े-बड़े पापियों की देख-भाल पर रहा हूं। कठिनाई तो अब आ पड़ी है कि मुझे उस साधु पर नियत कर दिया गया है, जो इस वृक्षकुंज में रहता है। और तुम नहीं जानते कि यह काम किस कदर कठिन और सावधानी का है।"

"यह तो तुम्हारा ख्याल ही है," दूसरा बोला, "भला, एक साधु की देखभाल किसी पापी की देखभाल से कठिन क्योंकर हो सकती है ?"

"क्या अशिष्टता है यह", पहले ने कहा, "मैं तुमसे ठीक-ठीक बात कह रहा हूं और तुम इसे केवल एक विचार बताते हो !"

बात तू-तू-मैं-मैं से बढ़कर हाथापाई पर पहुंची और फिर

लगी दोनों तरफ से मुक्कममुक्का होने।

इधर ये दोनों गुत्थमगुत्था हो रहे थे कि इतने में उनका एक सरदार कहीं से वहां आ निकला।

उसने दोनों को अलग-अलग करते हुए कहा, "बड़ी लज्जा की बात है कि नगर के द्वार पर दो रक्षक देव यों आपस में लड़ें और वह भी बिना किसी कारण के! मैं भी तो जरा सुनूं कि वह बा ा क्या है?"

दोनों एक साथ चिल्ला उठे।

वे चिल्ला-चिल्लाकर यह प्रमाणित करने का प्रयत्न कर रहे थे कि जो काम एक के जिम्मे है वह दूसरे के काम से कहीं अधिक कठिन है। और इसलिए वह दूसरे से श्रेष्ठ है।

यह सुनकर सरदार सोच में पड़ गया। वह बोला, "मेरे साथियो, मैं यह तो निर्णय नहीं कर सकता कि तुममें से प्रशंसा के योग्य कौन है, किन्तु शांति स्थापित करने के लिए मैं तुम्हारे पदों को अवश्य बदल देता हूं क्यों कि तुम दूसरे के काम को सरल समझते हो। अच्छा, अब खुशी-खुशी अपने-अपने नए काम पर चले जाओ।"

दोनों देव नई आज्ञाएं सुनकर अपने-अपने रास्ते चल तो दिए, परन्तु मुड़-मुड़कर इस सरदार देव को घूर रहे थे और मन ही मन कह रहे थे, "बड़े आए सरदार बनकर। जीवन को प्रत्येक दिन पहले से भी अधिक दूभर बनाए जा रहे हैं।"

किन्तु वह सरदार देव वहीं का वहीं खड़ा था और सोच रहा था कि अब हमें और भी अधिक सावधान रहना पड़ेगा, इन रक्षक देवों की देखभाल के लिए।

मूर्ति

दूर पर्वत की तलहटी में एक आदमी रहता था। उसके पास प्राचीन कलाकारों की बनाई हुई एक मूर्ति थी, जो उसके द्वार पर औंधी पड़ी रहती थी। उसे उसका कोई गुण मालूम न था।

एक दिन एक शहरी इधर आ निकला। वह एक पढ़ा-लिखा विद्वान् था। उसने उस मूर्ति को देखकर उसके मालिक से पूछा, "क्या आप इसे बेचेंगे ?"

यह सुनकर वह हंस दिया और कहने लगा, "इस पत्थर को कोई क्यों मोल लेगा ?"

शहरी बोला, "एक रुपया तो मैं लगाता हूं।"

ग्रामीण इस सौदे पर चकित था। परन्तु उसे क्या ? वह तो रुपये को अपनी गांठ में बांध चुका था। शहरी मूर्ति को हाथी की पीठ पर उठवाकर शहर में ले गया।

कई महीनों के पश्चात् वह ग्रामीण शहर गया, तो बाजार में फिरते-फिराते एक जगह भीड़ लगी देखकर वह भी वहां रुक गया।

एक आदमी ऊंची आवाज में पुकारकर कह रहा था, "आओ! एक अनूठी नवीनतम वस्तु देखो, यह एक अमूल्य मूर्ति है, जिसके जोड़ की मूर्ति दुनिया भर में कहीं न होगी। शिल्प-

कला के इस अद्वितीय नमूने को देखने के लिए केवल दो रुपए—केवल दो रुपए ।"

ग्रामीण ने भी दो रुपए देकर उस निराली मूर्त्ति को देखने के लिए अन्दर प्रवेश किया, जिसे उसने स्वयं एक रुपए के बदले बेचा था ।

पागल

पागलखाने के बाग में मैंने एक नवयुवक को देखा, जिसका सुन्दर मुख पीला हो रहा था, जिसपर हैरानी की स्याही चढ़ी हुई थी।

मैं उसके पास बेंच पर जा बैठा और पूछा, "तुम यहां कैसे ?"

उसने चौंककर मेरी तरफ देखा और कहा, "यहां आपका यह प्रश्न यद्यपि व्यर्थ है, फिर भी उत्तर अवश्य दूंगा।" वह कहने लगा—

"मेरे पिता की यह इच्छा थी कि मैं ठीक उसकी प्रतिमूर्ति बनूं और यही इच्छा मेरे चाचा की भी थी। मेरी मां की यह इच्छा थी कि मैं अपने स्वर्गीय नाना के चरण-चिह्नों पर चलूं। और मेरी बहिन अपने निर्भीक नाविक पति को मेरे लिए सर्वश्रेष्ठ आदर्श समझती थी। मेरा भाई सोचता था कि मुझे और कुछ नहीं वरन् उसके समान एक नामी पहलवान बनना चाहिए।

"और यही हाल मेरे गुरुओं का था—न्याय, संगीत और तर्क के अध्यापकों का। सबकी यही इच्छा थी। और वे बड़े परिश्रम से इस प्रयत्न में थे कि वे मुझमें अपने गुण इस प्रकार प्रतिबिम्बित देखें, जिस प्रकार दर्पण में अपना प्रतिबिम्ब देखते हैं।

"और मैं यहां इसलिए चला आया कि यहां वहां से अधिक शान्ति है और मैं कम से कम 'मैं' तो बन सकता हूं।"

फिर एकाएक वह मेरी तरफ मुड़ते हुए बोला, "परन्तु आप यहां कैसे पहुंचे? उच्च शिक्षा के कारण या अच्छी संगति की कृपा से?"

मैं भौंचक्का-सा रह गया और कहने लगा, "नहीं, नहीं, मैं तो केवल भेंट करनेवाला मुलाकाती हूं।"

"हूं!" वह बोला, "तो मैं समझा, आप उनमें से हैं, जो इस दीवार के उधरवाले पागलखाने में रहते हैं।"

मेंढक

गरमी के एक प्रातःकाल एक मेंढक ने मेंढकी से कहा, "मेरा विचार है कि जो लोग झील के इधर रहते हैं, हमारे रात के टर्राने से कष्ट तो अवश्य पाते होंगे ?"

मेंढकी बोली, "क्या दिन के समय वे अपनी निरर्थक बातों से हमारे सुख में विघ्न नहीं डालते ?"

मेंढक ने कहा, "कुछ भी हो, परन्तु हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि हम टर्राते कुछ अधिक ही हैं।"

मेंढकी बोली, "और हमें यह भी न भूलना चाहिए कि दिन को वे आवश्यकता से कुछ अधिक ही चिल्लाते और शोर मचाते हैं।"

मेंढक बोला, "पर उस टर्रू का भी कभी तुमने ख्याल किया, जो रात भर अपने शोर से पड़ोसियों का दम नाक में कर देता है ?"

मेंढकी ने कहा, "परन्तु क्या तुमने कभी इन नेताओं, रासायनिकों और धर्म-प्रचारकों का भी ख्याल किया, जो दिन भर अपने शोर, चीख-पुकार से वातावरण को बिगाड़ते रहते हैं ?"

मेंढक बोला, "छोड़ो इन्हें। हमें कम से कम इन मनुष्यों से तो श्रेष्ठ होना चाहिए न। अब हम रात को चुप रहेंगे;

अपने गीत अपने दिल में रखेंगे, चाहे चांद हमारे गायन के लिए और तारे हमारे गीतों के लिए चिल्लाते ही क्यों न रहें।"

उस रात मेंढक चुप रहे, दूसरी रात भी न टर्राए और तीसरी रात भी नहीं।

परन्तु इसपर एक अचरज की बात हुई कि झील के इधरवाले किनारे पर रहनेवाली एक बातूनी स्त्री तीसरे दिन जलपान के समय अपने पति से शिकायत कर रही थी——

"मैं तीन रात से जरा भी नहीं सोई। पहले जब ये मुए मेंढक टर्राते थे तो कम से कम नींद तो आ जाती थी। अब जाने तीन रात से इन्हें क्या सांप सूंघ गया है कि बिल्कुल टर्राते ही नहीं। और अनिन्द्रा से मेरा सिर फटा जाता है।"

मेंढक ने सुना तो मेंढकी की तरफ मुड़कर आंख मटकाते हुए बोला, "इस खामोशी से हम भी तो पागल हुए जाते थे। नहीं क्या ?"

मेंढकी बोली, "हां क्यों नहीं। रात का यह सन्नाटा हमारे लिए भी तो संकट बना हुआ था। परन्तु तुमने तो देख लिया न कि हमारे लिए चुप रहना आवश्यक है ही नहीं और वह भी उन लोगों की खातिर जो अपने आसपास की निस्तब्धता को शोर से भरा रखना चाहते हैं।"

उस रात इनके गायन के लिए चांद की पुकार और इनके गीतों के लिए तारों की प्रार्थना व्यर्थ न गई।

कानून और कानून बनानेवाले

बहुत पुराने काल में एक बहुत बूढ़ा राजा एक बहुत ही बड़े देश पर राज करता था।

राजा बहुत ही न्यायप्रेमी, बड़ा ही बुद्धिमान् और अत्यन्त दयालु था। वह अपनी प्रजा के लिए अच्छे-अच्छे कानून बनाना चाहता था।

इस उद्देश्य-पूर्ति के लिए उस राजा ने एक हजार भिन्न-भिन्न कबीलों से एक हजार बुद्धिमान मनुष्य बुलवाए, जो कि उसकी राजधानी में इकट्ठे होकर कानून बनाएं।

और वे हजार बुद्धिमान मनुष्य इस काम को पूरा करने के लिए उसकी राजधानी में इकट्ठे हो गए।

परन्तु जब उन्होंने एक हजार कानून बनाकर राजा के सामने पेश किए और उसने उन्हें पढ़ा, तो उसे बहुत दुःख हुआ। वह अपने दिल ही दिल में बहुत रोया क्यों कि उसे यह मालूम न था कि उसके देश में हजार प्रकार के अपराध किए जाते हैं।

फिर उसने अपने लेखक को बुलाया और बड़े आत्म-विश्वास के साथ मुस्कराते हुए उसे स्वयं कुछ कानून लिखवाए। ये नियम गिनती में केवल सात थे!

इसपर वे सब कानून बनानेवाले उससे अप्रसन्न होकर

अपने-अपने कबीलों में इन स्वरचित कानूनों को लेकर वापस चले गए। प्रत्येक कबीला अपने-अपने प्रमुख के बनाए हुए नियमों का पालन करने लगा।

और आजतक इन कबीलों में इसीलिए वे ही एक हजार नियम चालू हैं। यह एक बहुत बड़ा देश है, इसमें एक हजार कैदखाने हैं और इनमें ऐसे स्त्री-पुरुष तथा बच्चे भरे हुए हैं जो हजारों कानून प्रतिदिन तोड़ते हैं। निस्सन्देह यह बहुत बड़ा देश है।

यह बहुत ही बड़ा देश है और इसकी आबादी उन एक हजार कानून बनानेवालों की सन्तान के दम से कायम है, जिनमें केवल एक बुद्धिमान राजा था।

अभिसारिका

मैंने अपने मित्र से कहा, "तुम उस स्त्री को उसकी भुजा पर झुकी हुई देख रहे हो, कल ठीक इसी तरह यह मेरी भुजा पर झुकी हुई थी।"

मेरे मित्र ने कहा, "और कल यह मेरी भुजा पर झुकी होगी।"

मैंने कहा, "जरा देखो तो, किस प्रकार उसकी गोद में पड़ी है। कल इसी तरह मेरी गोद में पड़ी थी।"

मेरा मित्र बोला, "और ठीक इसी तरह कल यह मेरी गोद में पड़ी होगी।"

मैंने कहा, "जरा देखो तो, यह उसके प्याले से मुंह लगाए हुए है और कल ठीक इसी तरह मेरे प्याले से होंठ चिपकाए हुई थी।"

उसने कहा, "और कल यह मेरे प्याले से पी रही होगी।"

मैंने फिर कहा, "देखो तो उसकी तरफ, किस प्रेमभरी दृष्टि से देख रही है। आंखों में अर्पण कर देने का संकेत है। और कल बिल्कुल इसी तरह मेरी तरफ देख रही थी।"

मेरा मित्र बोला, "और कल इसी दृष्टि से मुझे देख रही होगी।"

मैंने कहा, "क्या तुम नहीं देख रहे हो, कि यह उसके

कान में प्रेमभरे गीत गा रही है, ठीक वही गीत जो कल मेरे कानों में गा रही थी ?"

मेरा मित्र बोला, "और कल यह इन्हीं गीतों को मेरे कान में गा रही होगी।"

मैं चिल्लाया, "पर देखो तो, यह उसका आलिंगन कर रही है; और कल बिल्कुल इसी तरह मुझसे लिपटी हुई थी।"

मेरा मित्र बोला, "और कल यह मुझसे लिपटी होगी।"

मैं झल्ला उठा, "कैसी स्त्री है यह !"

परन्तु उसने कहा, "वह जीवन के समान है, जिसपर सबका अधिकार है और मृत्यु की तरह वह हर एक को वश में कर लेती है और अनन्त की तरह हर एक को अपनी लपेट में ले लेती है।"

दार्शनिक और मोची

एक मोची की दुकान पर एक दार्शनिक आया। दार्शनिक के जूते फटे हुए थे।

दार्शनिक ने मोची से कहा, "कृपा करके मेरे जूतों की मरम्मत कर दीजिए।"

मोची बोला, "क्षमा कीजिए। एक तो मैं यह जोड़ा सी रहा हूं, दूसरे दो-चार जोड़े मरम्मत के लिए अभी और पड़े हैं। इनके पश्चात् आप के जूतों की बारी आएगी। फिर भी आप अपने जूते यहां छोड़ जाइए। आज के दिन यह जोड़ा पहन लीजिए। कल पधारिए और अपने जूते ले जाइए।"

मोची के इस उत्तर पर दार्शनिक तैश में आकर बोला, "मैंने कभी कोई ऐसा जूता नहीं पहना, जो मेरा अपना न हो।"

"आप कहीं दार्शनिक तो नहीं?" मोची ने पूछा। मोची अपने इस प्रश्न का उत्तर न पाकर बोला, "तो आप सचमुच दार्शनिक मालूम होते हैं, तभी किसी दूसरे के जूतों से अपने पांव छुआना आपको पसन्द नहीं। हां, तो इसी बाजार में एक और भी मोची बैठता है और वह दार्शनिकों के स्वभाव को मुझसे अधिक अच्छा समझता है। आप अपने इन जूतों की मरम्मत के लिए उसीके पास ले जाइए।"

पुल बनानेवाले

अन्ताकिया नगर में उस स्थान पर शहर के आधे भाग को दूसरे भाग से मिलाने के लिए एक पुल बनाया गया, जहां आसी नदी समुद्र में गिरती है।

पुल भारी-भारी पत्थरों से बनाया गया। इन्हें अन्ताकिया के खच्चरों पर लादकर पहाड़ों से लाया गया था।

जब पुल बनकर तैयार हो गया, तो उसके एक खम्भे पर यूनानी और आरमियन भाषा में यह लेख अंकित कर दिया गया—"यह पुल महाराजा अन्ताक्यूस द्वितीय ने बनाया था।"

अब लोग इस सुन्दर पुल से आसी नदी के आरपार आते-जाते थे। एक सन्ध्या को एक पागल-सा नवयुवक इस खम्भे पर चढ़ गया। उसने उस लेख को कोयले से मिटा दिया और उसके स्थान पर यह लिख दिया—

"इस पुल के लिए पत्थर पहाड़ों पर से खच्चर लाए थे। इस पुल को पार करते हुए आप अन्ताकिया के उन खच्चरों की पीठ पर चलते हैं जो कि वास्तव में इस पुल के बनानेवाले हैं।"

और जब लोगों ने इस नवयुवक का लेख पढ़ा, तो कुछ तो केवल हंस दिए और कुछ उसकी सूझपर चकित हुए।

और कुछ ने सिर्फ इतना कहा, "ओहो, हम जानते हैं कि यह किस पागल का काम है और क्यों, इसके दिमाग के पेच कुछ ढीले नहीं हैं क्या ?"

परन्तु एक खच्चर ने हंसते हुए दूसरे खच्चर से कहा, "तुम्हें याद नहीं कि ये पत्थर हमने ढोए थे। परन्तु फिर भी आज तक यही कहा जाता रहा है कि यह पुल महाराजा अन्ताक्यूस ने बनाया था।"

जाद की रणभूमि

जाद की सड़क पर एक पथिक एक देहाती से मिला। देहाती पास ही के एक गांव का रहनेवाला था।

पथिक ने जाद के खेतों की तरफ इशारा करते हुए उससे पूछा, "क्या यही वह मैदान है, जहां बादशाह अलहम ने अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त की थी ?"

देहाती बोला, "यहां तो कभी कोई लड़ाई नहीं हुई। हां, इन खेतों में कभी जाद का वैभवशाली नगर जरूर बसा हुआ था, जो जलकर राख हो गया; परन्तु अब तो यहां बड़े उपजाऊ खेत हैं। ये खेत अच्छे नहीं हैं क्या ?"

पथिक आगे बढ़ गया।

कोई आध मील पर वह एक और आदमी से मिला। जाद के खेतों की ओर संकेत करते हुए पथिक ने उससे पूछा, "तो क्या यह है वह स्थान, जहां कभी जाद का वैभवशाली नगर आबाद था ?"

राही बोला, "यहां कोई शहर तो कभी भी आबाद न था। हां, एक मठ यहां अवश्य होता था, परन्तु बहुत समय हुआ दक्खिनवालों ने उसे नष्ट कर दिया।"

थोड़ी ही देर के पीछे इसी सड़क पर वही पथिक एक और

आदमी से मिला। और इन चौड़े खेतों की ओर संकेत करते हुए एक बार फिर उसने पूछा, "क्या यह सच नहीं है कि यहां कभी एक बड़ा मठ था, जिसे दक्खिनवालों ने नष्ट कर दिया था ?"

वह आदमी बोला, "यहां तो कभी भी कोई मठ न था। हां, हमारे बाप-दादा कहा करते थे—यहां आज से शताब्दियों पहले एक बड़ा दुमदार तारा गिरा था।"

मन ही मन में विस्मित हुआ वह पथिक अपनी राह चल रहा था।

अब थोड़ी ही दूर जाने पर उसे एक बूढ़ा मिला, जिसका सफेद सिर उसके झुके हुए कंधों के लिए अधिक बोझल हो रहा था।

बूढ़े को नमस्कार करते हुए, उसने कहा, "दादा, इसी सड़क पर मैं तीन भिन्न आदमियों से मिला हूं, जो इसी प्रदेश में रहते हैं। इन खेतों के विषय में मैंने अलग-अलग हर एक से पूछा, परन्तु आश्चर्य की बात है कि हर एक आदमी ने एक दूसरे के कथन को झुठलाया : हर आदमी ने एक दूसरे से भिन्न कहानी बताई।"

बूढ़े ने अपना सिर ऊपर उठाते हुए मुस्कराकर कहा, "यह बात नहीं बेटा, हर एक आदमी ने तुम्हें वही कुछ बताया है जो ठीक बात थी, परन्तु कठिनाई यह है कि हममें बिरले ही ऐसे आदमी हैं, जो विपरीत बातों में से सच्ची बात निकाल सकें।"

सुनहरा कमरबन्द

एक बार सलामीज नगर की ओर जाते हुए दो बटोहियों का रास्ते में मेल हो गया। चलते-चलते दोपहर के करीब वे एक ऐसी नदी पर पहुंचे, जिसके चौड़े पाट को पार करने के लिए न कोई नाव थी और न पुल। अब या तो वे नदी को तैरकर पार करें या फिर कोई नया मार्ग ढूंढें। एक ने दूसरे से कहा, "आओ, फिर इसे तैरकर ही पार कर लें। आखिर नदी इतनी चौड़ी भी तो नहीं है।"

दोनों नदी में कूद पड़े।

इन दोनों में से उस आदमी का बीच धारा में ही दम फूल गया, जो नदी की उंचान-निचान से खूब परिचित था। वह तेज बहते हुए पानी के साथ-साथ बहकर दूर ही होता गया।

और दूसरा आदमी जिसने इससे पहले उस नदी को न देखा था और न तैरना ही जानता था, बिल्कुल सीधा तैरकर दरिया के दूसरे किनारे जा पहुंचा। परन्तु अब जो उसने अपने साथी को पानी में डुबकी खाते देखा तो उसे पानी में फिर कूदना पड़ा।

वह उसे भी बचाकर किनारे पर ले आया। नदी के तेज

बहते हुए पानी के थपेड़ों ने उसकी दुर्गति बना दी थी। किनारे पर पहुंचकर वह अपने साथी से बोला, "मित्र, तुम तो बता रहे थे कि तुमने कभी पानी का मुंह तक नहीं देखा, परन्तु नदी तो इस सरलता से पार की कि मैं भी हैरान हूं!"

दूसरे ने कहा, "भाई, तुम शायद मेरे इस कमरबन्द को नहीं देख रहे? इसमें मोहरें भरी हुई हैं और इन्हें मैंने अपनी स्त्री तथा बच्चों के लिए एक-एक करके जोड़ा है। मेरी वर्ष भर की कमाई है यह! और यह इसी कमरबन्द का बोझ था जो मुझे नदी के पार ले आया; नदी के उस किनारे से इस किनारे पर—मेरी स्त्री और मेरे बच्चों के पास। जब मैं नदी में तैर रहा था, तब मेरी पत्नी और मेरे बच्चे मेरे कन्धों पर थे।" और फिर वे दोनों एक साथ सलामीज के रास्ते पर हो लिए।

सन्त भिक्षु

प्राचीन काल में एक सन्त भिक्षु रहता था। वह महीने में तीन बार शहर जाता और चौक में खड़ा होकर लोगों को आपसी मेलजोल तथा दान-त्याग का उपदेश करता था। उसके व्याख्यान में जोर था और वाणी में प्रभाव। दूर-दूर तक उसकी धूम थी।

एक सन्ध्या को तीन आदमी उसकी कुटिया में आए। उसने उनका स्वागत किया। वे बोले, "आप पारस्परिक मेल-जोल तथा दान-त्याग का उपदेश देते हैं। आपने उन लोगों को निर्धनों से प्रेम करने का सन्देश दिया है, जिनके पास आवश्यकता से अधिक धन है। इसमें जरा भी सन्देह नहीं कि आपकी ख्याति ने आपके चरणों में धन के ढेर लगा दिए हैं। हम जरूरतमन्द हैं, आप हमारी सहायता कीजिए; हमें कुछ दीजिए।"

भिक्षु बोला. "मेरे मित्रो! मेरे पास इस बिस्तर, चटाई और लोटे के सिवा और कुछ भी नहीं। यदि ये आपके किसी काम आ सकें, तो इन्हें ले जाइए, और तो मेरे पास न चांदी है, न सोना।"

इसपर वे क्रुद्ध होकर चले गए। परन्तु तीसरा आदमी जाते-जाते दरवाजे पर रुक गया और कहने लगा, "तुम छलिया, मायाचारी और धूर्त हो! तुम दूसरों को ऐसी भलाई का उपदेश क्यों करते हो, जिसपर स्वयं आचरण नहीं कर सकते?"

पुरानी शराब

एक अमीर को अपने ठण्डे तहखाने और अपनी पुरानी शराब पर बड़ा अभिमान था। उसके पास पुरानी शराब का एक बहुत बड़ा घड़ा था, जो किसी विशेष उत्सव के लिए उस तलघर में रखा था, जिसका पता केवल उस धनी को ही था।

नगरपति उसके यहां आया, तो उसने सोचा कि क्या पुरानी शराब का घड़ा मैं एक साधारण अधिकारी के लिए खोल दूं? नहीं, कभी नहीं!

गिरजे का बड़ा पादरी उसको भेंट के लिए आया, किन्तु उसने फिर भी अपने आपसे यही कहा, "नहीं, वह घड़ा मैं नहीं खोलूंगा। इस पादरी को पुरानी शराब का गुण क्या मालूम। इसकी तो महक भी इसके नथनों तक नहीं पहुंचनी चाहिए।"

उस देश का राजकुमार उसके यहां विशेष भोजन पर आया, परन्तु उसने सोचा, "इतनी शानदार शराब और इसे मैं एक साधारण राजकुमार के प्याले में उंडेल दूं! नहीं, नहीं, कभी नहीं!"

यहां तक कि अपने भतीजे के विवाह में भी, जिसमें बड़े-

बड़े अमीर और रईस निमन्त्रित थे, उसने अपने आपसे केवल यही कहा, "नहीं, इन अतिथियों के लिए मैं अपनी शराब का पैमाना नहीं खोल सकता।"

समय यों ही बीत गया और अन्त में बूढ़ा अमीर मर गया। साधारण आदमियों के समान उसे भी दफन कर दिया गया। जिस दिन उसे दफन किया गया, शराब का वह पुराना घड़ा दूसरे मटकों के साथ बाहर लाया गया। उन्हें आसपास के ग्रामीणों ने आपस में बांट लिया, पर किसीको इस पुरानी शराब के किसी विशेष गुण का पता तक भी न चला। उनके लिए जो कुछ भी मधुपात्र में डाला गया, वह शराब थी; शराब—क्या घटिया, क्या बढ़िया!

दो गीत

शताब्दियां हुईं; एथेन्स की सड़क पर दो कवि एक दूसरे से मिले। आपस मे मिलकर इन्हें बड़ी प्रसन्नता हुई।

एक ने दूसरे से पूछा, "आपने इन दिनों क्या लिखा है ?"

दूसरे कवि ने बड़े घमण्ड से कहा, "मैंने अभी-अभी अपनी सर्वश्रेष्ठ कविता पूरी की है—शायद यूनानी भाषा की सर्वश्रेष्ठ कविता। यह इष्टदेव जपोइस की प्रशंसा में है।"

उसने यह कहते हुए अपने चमड़े के थैले से एक पाण्डुलिपि निकाली और कहा, "देखो, यह रही मेरी वह कविता। तुम चाहो तो तुम्हें पढ़कर सुनाने में मुझे कोई आपत्ति न होगी। आओ, सफेदे के इस वृक्ष के तले बैठ जाएं।"

कवि ने अपनी कविता पढ़नी आरम्भ की। यह एक बहुत ही लम्बी कविता थी।

"बड़ी अच्छी चीज है," पहले कवि ने बड़ी उदारता के साथ प्रशंसा की, "यह कविता बहुत समय तक जीवित रहेगी और इससे आपका बड़ा नाम होगा।"

अब दूसरे कवि ने पूछा, "परन्तु तुमने इतने दिनों में क्या लिखा है ?"

"बहुत ही कम लिखा है मैंने," पहले कवि ने उत्तर

दिया, "बाग में खेलते हुए एक बच्चे की याद में केवल आठ छन्द ।"

और इस कवि ने अपने वे आठ छन्द पढ़कर उसे सुना दिए ।

"कुछ ऐसे बुरे नहीं हैं ।" दूसरे कवि ने बड़े घमण्ड से अपनी सम्मति देते हुए कहा ।

और आज दो सहस्र वर्ष गुजरने पर भी इस कवि के वे आठ छन्द गाए जाते हैं ।

और यद्यपि वह दूसरी कविता 'जपोइस महान् की प्रशंसा' शताब्दियों से प्राचीन पुस्तकों में सुरक्षित है, किन्तु न उसे कोई पढ़ता है और न ही कोई पसन्द करता ह ।

श्रीमती रूही

तीन आदमी दूर खड़े उस सफेद मकान की ओर देख रहे थे, जो सामने पहाड़ की चोटी पर खड़ा था।

इनमें से एक ने कहा, "यह श्रीमती रूही का घर है, उस बूढी चुड़ैल का !"

"अरे, तुम क्या जानो," दूसरा बोला, "श्रीमती रूही तो गजब की सुन्दर स्त्री है, जो दिन-रात अपने स्वप्नों के जादू में खोई रहती है।"

"तुम दोनों गलत कहते हो," तीसरे ने कहा, "श्रीमती रूही तो इन चौड़े खेतों की मालिक है और अत्याचारी जमीन्दारों की तरह अपने किसानों का खून चूसती है।"

वे श्रीमती रूही के सम्बन्ध में बातें करते बढ़ते चले गए। जब चौराहे पर पहुंचे, तो इन्हें एक बूढ़ा मिला। इनमें से एक ने पूछा, "क्या आप श्रीमती रूही के बारे में कुछ बता सकते हैं, जो पहाड़ीवाले सफेद घर में रहती है ?"

"रहती है !" बूढे ने मुस्कराते हुए अपना सिर उठाया, और कहा, "मैं नब्बे वर्ष का हो गया हूं भाई, और श्रीमती रूही के बारे में उस समय से जानता हूं, जब मैं कभी छोटा बच्चा था। श्रीमती रूही को मरे अस्सी वर्ष बीत चुके हैं और वह घर तब से खाली पड़ा है। हां, परन्तु कभी-कभी वहां उल्लू बोलते जरूर सुनाई देते हैं, और लोग यह ख्याल करते हैं कि वहीं भूतों का बसेरा है।"

चूहा और बिल्ली

सायंकाल एक कवि की एक गांववाले से भेंट हुई। कवि अपरिचित था और ग्रामीण शर्मीला, किन्तु फिर भी वे देर तक खड़े आपस में बातें करते रहे।

गांववाला बोला, "मैं आपको एक कहानी सुनाता हूं, जिसे मैंने अभी हाल में ही सुना है : एक चूहा पिंजरे में फंस गया, पर उसमें कैद होकर भी वह भीतर पड़ा पनीर खाता रहा। बाहर एक बिल्ली आ खड़ी हुई। चूहा पहले तो डरा, पर फिर उसे ख्याल आया कि वह तो पिंजरे में कैद है, और बिल्ली के पंजों की पहुंच से बाहर।

"यह देखकर बिल्ली बोली, मेरे मित्र, जानते भी हो कि तुम अपना अन्तिम खाना खा रहे हो !

"हां, चूहे ने उत्तर दिया, मेरा जीवन एक है, इसलिए मौत भी एक ही होगी। परन्तु तुम्हारा क्या हाल है मौसी बिल्ली ? सुनते हैं नौ जीवन हैं तुम्हारे। इसका मतलब यह हुआ कि तुम्हें नौ बार मरना भी पड़ेगा !"

ग्रामीण ने कवि की तरफ देखते हुए कहा, "कितनी रोचक है यह कहानी ! क्यों नहीं है क्या ?"

कवि ने इसका कुछ उत्तर न दिया, और अपने मन में

यह कहता हुआ चल दिया, "निस्सन्देह हमारे भी नौ जीवन हैं, निश्चय ही नौ ! और नौ बार ही हमें मरना पड़ेगा। नौ बार ! अच्छा होता कि हमारा भी एक ही जीवन होता– पिंजरे में बन्द एक चूहे का-सा जीवन ! और खाने के लिए पनीर के टुकड़े के साथ रोटी ! परन्तु क्या हम जंगल और सहारा में रहनेवाले शेर के भाई-बन्द नहीं हैं ?"

अभिशाप

तीस वर्ष हुए, एक बूढ़ मांझी ने कहा, "एक नवयुवक मांझी मेरी पुत्री को भगाकर ले गया। उसे अपने दिल ही दिल में मैंने अभिशाप दिया था क्योंकि मेरी बेटी मुझे दुनिया की हर वस्तु से अधिक प्यारी थी और दुनिया की हर वस्तु से अधिक मैं उसे चाहता था।

"थोड़े ही दिनों के पश्चात् समाचार मिला कि वह नवयुवक मांझी अपनी नाव समेत समुद्र में डूब गया है और उसके साथ ही मेरी बच्ची भी डूब गई है। मेरी बेटी मुझसे छिन गई! अब तुम मेरे इस अभागे शरीर में एक का नहीं दो का खून देख रहे हो—एक निर्भीक मांझी का और दूसरे एक निर्दोष लड़की का। यह मेरा अभिशाप था, जिसने उनका सर्वनाश कर दिया।

"और अब मैं कब्र में पांव लटकाए परमात्मा से दया तथा क्षमा की प्रार्थना करता रहता हूं।"

बूढ़े मांझी ने आंसूभरी आंखों से यह कहा तो सही पर उसकी बातचीत में खेद की अपेक्षा अपनी डींग का रंग अधिक था; जैसे उसे अपने अभिशाप के प्रभाव पर बड़ा घमण्ड था।

अनार

एक आदमी के पास अनार का एक बहुत बड़ा बाग था। मुद्दत से उसका यह व्यवहार था कि फसल के दिनों में चांदी के थालों में अनार भरकर घर के बाहर रख देता और चांदी के इन थालों पर अपने हाथ से यह लिखकर लगा देता, "जितने में चाहो, एक अनार उठा लो, आपको आज्ञा है।"

परन्तु लोग पास से चले जाते और कोई इस तरफ ध्यान भी न देता।

अन्त में बहुत सोच-विचारकर उस आदमी ने एक उपाय निकाला और इस वर्ष फसल के समय चांदी के थालों में पके हुए लाल अनार रखने के स्थान पर एक तखता ऊंचा करके लटका दिया। इसपर लिखा था, "हमारे यहां बढ़िया अनार हैं और इनका मोल भी देश भर के दूसरे अनारों से बहुत बढ़कर है।"

इसको देखकर दूर-दूर से स्त्री-पुरुष सभी इन अनारों को मोल लेने आने लगे।

परमात्मा और देवता

कैलाफश नगर में एक कुतर्कवादी मन्दिर की सीढ़ियों में खड़ा बहुदेवतावाद का प्रचार कर रहा था। वहां आए लोग अपने मन में कहते थे, "हम यह सब कुछ जानते हैं। क्या ये सब देवता हमारे साथ नहीं रहते और जहां कहीं भी हम जाएं हमारा पीछा नहीं करते ?"

थोड़ी ही देर पश्चात् एक और आदमी चौक में खड़ा लोगों से कह रहा था, "कोई परमात्मा नहीं है !" जिसने भी इसे सुना, प्रसन्न हुआ कि उन्हें परमात्माओं से जो डर लगता था, वह दूर हुआ।

फिर किसी और दिन एक और आदमी आया। इसकी वाणी में तेज और व्याख्यान-शैली में आकर्षण था। इसने कहा, "लोगो ! परमात्मा केवल एक है।" सुननेवालों के दिल बुझ गए क्योंकि मन में वे बहुत-से परमात्माओं के न्याय की अपेक्षा एक परमात्मा के न्याय से अधिक भय खाते थे।

इसी वर्ष एक और धर्म-प्रचारक आया और इसने लोगों से कहा, "वास्तव में परमात्मा तीन हैं, और वे तीनों बाह्यरूप से एक बनकर रहते हैं। इनकी एक बहुत ही कृपालु मां है।"

इसपर कैलाफश के लोग बहुत प्रसन्न हुए। वे दिल ही

दिल में कहने लगे, "एक परमात्मा, एक में तीन ! निस्सन्देह हमारे दोषों और दुर्बलताओं के विषय में कभी भी वे एकमत नहीं हो सकते। और फिर इनकी कृपालु मां; वह हम दुर्बल हृदयवालों के दोषों की उपेक्षा अवश्य करेगी !"

आज के दिन तक कैलाफश नगर में सहस्रों ऐसे लोग हैं, जो परमात्मा के होने या न होने के बारे में झगड़ते हैं, और एक परमात्मा, तीन परमात्माओं और इनकी मां की सत्ता पर वाद-विवाद करते रहते हैं।

वह, जो बहरी थी

एक नवयुवक व्यापारी था। वह बहुत ही धनी और रूपवान था। उसकी धर्मपत्नी भी नवयुवती तथा सुन्दर थी, पर दुर्भाग्य से बहरी थी—बिल्कुल ही बहरी !

एक दिन प्रातः पति-पत्नी जलपान के लिए बैठे थे। स्त्री ने अपने पति से कहा, "कल मैं बाजार गई, तो देखा कि दुकानों पर दमिश्की रेशम, हिन्दी चोगे, ईरानी हार और यमनी मोती हैं। मालूम होता था कि कोई जौहरी बच्चा, अभी-अभी अपने काफले के साथ हमारे नगर में आया है। और इधर मुझे देखो कि इतने बड़े आदमी की स्त्री होकर भी चिथड़े लपेटे फिरती हूं ; मैं तो अब इनमें से अपने काम की कुछ वस्तुएं जरूर मोल लूंगी !"

"प्यारी, कोई कारण नहीं कि तुम बाजार न जाओ," पति ने कहवे का घंट पीते हुए कहा, "और अपनी जरूरत और पसन्द की वस्तुएं न मोल लो ?"

बहरी पत्नी चिल्लाई, "ना-ना तो हर समय तुम्हारी जबान पर है ! परन्तु इतना तो सोचो कि तुम्हारी स्त्री इन चिथड़ों में फिरेगी तो क्या तुम्हारे नाम और तुम्हारे धन को बट्टा न लगेगा ?"

वह बोला, "पर प्यारी, मैंने ना कब की है ? तुम जब चाहो, बाजार जाओ और अपने लिए बढ़िया से बढ़िया रेशम, सुन्दर से सुन्दर हार, और अच्छे से अच्छे मोती ले आओ।"

परन्तु बहरी पत्नी ने इसका भी उल्टा ही मतलब निकाला, "नगर के सब धनवानों में से एक तुम ही अत्यन्त कन्जूस हो," उसने रोते हुए कहा, "तुम मुझे हर सुन्दर वस्तु से केवल इसलिए वंचित रखते हो कि वह मंहगी है, यद्यपि मुझसे बड़ी-बड़ी आयु की स्त्रियां बढ़िया से बढ़िया रेशम और अच्छे से अच्छे मोती पहने फिरती हैं !"

रोते-रोते उसकी हिचकी बंध गई; श्वेत मोती-से आंसू उसके उभरी हुई छाती पर टप-टप गिर रहे थे।

वह चिल्ला रही थी, "मेरी इच्छाओं पर बस तुम 'ना,' 'ना' ही सुनाओगे। मेरे लिए तुम्हारे पास कभी कुछ नहीं रहता !"

नौजवान व्यापारी को अपनी पत्नी की विवशता पर तरस आ गया। वह उठा, अपनी थैली से मुट्ठी भर मुहरें निकालकर उसके सामने डाल दीं। और बड़े प्रेम से बोला, "जाओ प्रिये, जो कुछ भी तुम्हें पसन्द हो, ले आओ।"

उस दिन के पश्चात् उस नवयुवती सुन्दरी को जब भी किसी वस्तु की आवश्यकता होती, तो अपनी आंखों में आंसू लिए वह अपने पति के पास आ जाती और वह चुपचाप मुट्ठी भर मुहरें निकालकर उसके सामने डाल देता।

ऐसा हुआ कि उस सुन्दरी को किसी दूसरे नौजवान से प्रेम हो गया जो लम्बी-लम्बी यात्राओं का शौकीन था।

अब यह नौजवान जब कभी भी कहीं बाहर जाता, तो यह सुन्दरी प्रात:-सांझ खिड़की में खड़ी-खड़ी रोती रहती।

इधर जब भी इसका पति इसे यूं अपने गाल आंसुओं से भिगोते देखता, तो अपने मन में कहता, "नगर में जरूर कोई नया काफला नए-नए रेशमी चोगे, मूल्यवान हार और दुष्प्राप्य मोती लेकर आया है।"

वह मुट्ठी भर मुहरें निकालता और इसके सामने डाल देता।

खोज

••••••

शताब्दियां हुईं; लेबनान की घाटियों में दो दार्शनिक आ मिले।

एक ने दूसरे से पूछा, "कहां जा रहे हैं आप ?"

दूसरा बोला, "मैं जवानी के सरोवर की खोज में जा रहा हूं। और वह मेरे विचार में यहीं कहीं इन पहाड़ियों में से फूटता है। मैंने इसके बारे में प्राचीन पुस्तकों में भी देखा है कि वह सूरज की तरफ फल की तरह खिलता है।"

पहले दार्शनिक ने उत्तर दिया, "पर, मैं तो मृत्यु के रहस्य की खोज में हूं।"

दोनों दार्शनिक अपने-अपने मन में यह समझ रहे थे कि दूसरा इस रहस्य से सर्वथा अनभिज्ञ है और इस ज्ञान से कोरा, जो उसे स्वयं प्राप्त है। एक दूसरे पर अपना बड़प्पन जताने के लिए वे झगड़ने लगे।

वे एक दूसरे के आध्यात्मिक महत्व, दृष्टि तथा ज्ञान को झुठला रहे थे।

झगड़ा बढ़ते-बढ़ते हाथापाई की नौबत आ गई। उसी समय कहीं से एक ऐसा देहाती वहां आ निकला जिसे उसके गांववाले सीधासादा और मूर्ख समझते थे।

उसने जब उन दो पढ़े-लिखे विद्वानों को लड़ते-झगड़ते देखा तो उनकी बातें सुनने के लिए वहां रुक गया।

कुछ देर दूर खड़े उनकी बातें सुनते रहने के पश्चात्, वह उनके पास आ गया और उन्हें सम्बोधन करके बोला, "मेरे मित्रो! मालूम होता है, आप दोनों तत्त्वज्ञान के एक ही दृष्टिकोण पर सहमत हैं और दोनों को एक ही वस्तु की खोज है।

"यद्यपि आप दोनों ने इसे अलग-अलग नाम दे रखे हैं।

"आपमें से एक को जवानी के सरोवर की तलाश है और दूसरे को मृत्यु के रहस्य की—वास्तव में ये दोनों एक ही हैं और आप दोनों के अन्तर में मौजूद हैं। अच्छा मैं चलता हूं।"

देहाती यह कहकर विदा हो गया। वह इनसे कुछ दूर पहुंचने पर अपने मन में मुस्करा रहा था।

दोनों दार्शनिक क्षण भर तो चुपचाप खड़े एक दूसरे को तकते रहे फिर एकाएक वे भी खिलखिलाकर हंस पड़े।

उनमें से एक ने दूसरे से कहा, "तो क्यों न अब हम एक साथ खोज आरम्भ कर दें?"

राजदण्ड

राजा ने रानी से कहा, "रानी ! तुम सचमुच की रानी नहीं हो। मेरी धर्मपत्नी बनने के योग्य भी तुम नहीं हो, क्योंकि तुम अत्यन्त फूहड़ और कमसमझ हो !"

रानी बोली, "श्रीमान् भी तो अपने आपमें बहुत बड़े राजा बने फिरते हैं, परन्तु वास्तव में हैं निरे बुद्धू ही !"

राजा यह सुनकर क्रोध में आ गया।

उसने अपना राजदण्ड उठाया और अपने पूरे जोर से उसे रानी के माथे पर दे मारा।

सुनहरा राजदण्ड रानी के खून से लथपथ हो गया।

इसी समय एक बड़ा अधिकारी अन्दर आया और सिर झुकाकर बोला, "महाराज, यह राजदण्ड देश के सबसे बड़े कलाकार का बनाया हुआ है। मुझे खेद है कि एक न एक दिन दुनिया श्रीमान् को और रानी को भूल जाएगी। परन्तु यह राजदण्ड जो कला का एक अद्वितीय नमूना है, आनेवाली पीढ़ियों में शताब्दियों तक सुरक्षित रहेगा।

"और महाराज ने इस सुनहरी राजदण्ड से महारानी के सिर से खून निकाला है, तो यह राजदण्ड अब और भी अधिक महत्त्वपूर्ण स्मारकों में गिना जाएगा।"

रास्ता

पर्वत की तलहटी में एक मां और उसका इकलौता और पहला बच्चा एक साथ रहते थे।

चिकित्सक अभी सिरहाने ही खड़ा था कि बच्चा ज्वर से मर गया।

शोक से मां का संसार अंधेरा हो गया। ममता पुकार-पुकारकर चिकित्सक से पूछ रही थी, "मुझे बताओ! किस अत्याचारी ने इस बराबर चलनेवाली छाती की धड़कन को रोक दिया!

"किसने इस मीठी वाणी को शान्त कर दिया!"

चिकित्सक बोला, "यह ज्वर था।"

मां ने पूछा, "यह ज्वर क्या बला है?"

चिकित्सक उलझन में पड़ गया, "मैं ठीक तरह से तो बता नहीं सकता, पर होता है यह साधारण-सी तुच्छ वस्तु; किन्तु शरीर के भीतर प्रवेश करके जहर फैला देता है। पर कठिनाई यह है कि हम इसे देख नहीं सकते। मनुष्य की आंख इसे देख नहीं सकती।"

चिकित्सक चला गया। मां रोती रही और उसके शब्द दुहराती रही, "पर होता है यह साधारण-सी तुच्छ वस्तु; पर हम इसे देख नहीं सकते। मनुष्य की आंख इसे देख नहीं सकती।"

दिन ढले पादरी संवेदना प्रकट करने आया। ममता

अभी तक चिल्ला रही थी। मां के आंसू थमते ही न थे। वह पादरी से पूछ रही थी, "कोई मुझे बताओ! मेरा एक ही बच्चा मुझसे क्यों छिन गया ?"

"मेरा इकलौता लाल !"

"मेरा पहला बच्चा !"

पादरी बोला, "मेरी बच्ची, यह परमात्मा की इच्छा थी।"

मां बोली, "तो फिर परमात्मा क्या है ? वह कहां है ?

"मैं परमात्मा को देखना चाहती हूं! जिससे उसके सामने अपनी छाती खोलकर रख दूं और अपने हृदय का खून उसके चरणों में निचोड़ दूं। मुझे बताओ कि परमात्मा कहां है ?"

पादरी बोला, "बेटी, परमात्मा बहुत बड़ा है, पर मनुष्य की आंख उसे देख नहीं सकती।"

ममता फिर चिल्लाई, "एक बहुत ही तुच्छ वस्तु ने एक बहुत ही बड़े की इच्छा से मेरे लाल की जान निकाल ली ! तो फिर हम क्या हैं ?

"हम कौन हैं ?"

बच्चे की नानी बालक का कफन-कपड़ा लिए भीतर आ रही थी। उसने पादरी के शब्द भी सुने थे और अपनी बेटी का विलाप भी। उसने कफन नीचे रख दिया और फिर अपनी बच्ची का हाथ पकड़कर बोली, "मेरी बेटी, हम ही बहुत तुच्छ हैं और हम ही बहुत बड़े हैं और हम ही हैं इन दो छोरों के बीच एक अटल मध्यम रास्ता।"

ह्वेल और तितली

एक सन्ध्या को एक पुरुष और एक स्त्री, दोनों, एक साथ डाकगाड़ी में जा रहे थे।

पहले भी दोनों एक दूसरे से मिल चुके थे।

दोनों में पुरानी जान-पहचान थी।

पुरुष कवि था। स्त्री के पास बैठे-बैठे उसने सोचा कि वह किस्से-कहानी सुना-सुनाकर इसका मनोरंजन करे। कुछ उसकी अपनी रचनाएं थीं और कुछ दूसरों की।

कवि गल्पों के रंगीन जाल बुन रहा था, पर वह स्त्री सो रही थी।

गाड़ी के अकस्मात् झटके से वह जाग उठी, तो बोली, "जोना और ह्वेल की जो उपमा तुमने वर्णन की है, वह मुझे अत्यन्त पसन्द है।"

कवि बौखलाया, "श्रीमती! परन्तु, मैं तो आपसे अपनी लिखी हुई एक गल्प सुना रहा था, जो तितली और चम्पे की कोमल कली के सम्बन्ध में, इनके आपसी मेल-जोल और प्रेम के विषय में थी।"

स्थायी शान्ति

वृक्ष की एक फलीफूली टहनी ने दूसरी से कहा, "आज का दिन बहुत ही उजड़ा-उजड़ा और उदास-सा है।"

दूसरी टहनी बोली, "निस्सन्देह, दिन बहुत उदास और उजड़ा-उजड़ा-सा है।"

इसी क्षण एक चिड़ा एक टहनी पर आ बैठा और फिर एक दूसरी चिड़िया भी।

चिड़े ने चं-चूं करके कहा, "मेरी चिड़िया मुझे छोड़ गई है।"

चिड़िया बोली, "मेरा साथी भी मुझे छोड़ गया है और अब वह लौटकर न आएगा। परन्तु मुझे इससे क्या?"

दोनों चूं-चूं करने लगे और फिर एक दूसरे के पर नोचने लगे। अब वे लड़ रहे थे और शोर मचा रहे थे।

एकाएक दो चिड़ियां उड़ती हुई आकाश से नीचे उतरीं और इन दो धैर्यहीन चिड़ियों के पास चुपचाप बैठ गईं। अब वहां खामोशी थी।

अब वहां शान्ति थी।

फिर वे चारों चिड़ियां उड़ गईं।

पहली टहनी साथवाली से कहने लगी, "इसे तुम जो

चाहो, कहो, मैं तो इसे शान्तिपालक और आनन्ददायक समझती हूं। यदि ऊपर के वातावरण में शान्ति है तो नीचे भी शान्ति है। क्या तुम वायु में लहराकर मेरे पास नहीं आ सकतीं ?"

पहली टहनी बोली, "क्यों नहीं; शान्ति के लिए वसन्त के दिन बीतने से पहले। फिर वह वायु के तेज झोंके के साथ लहराकर इसे अपनी छाती से लिपटाते इसके समीप आ पहुंची।

सत्तर

नौजवान कवि ने महारानी से कहा, "मुझे तुमसे प्रेम है।"

महारानी ने उत्तर दिया, "मेरे बच्चे, मुझे भी तुमसे प्रेम है।"

कवि ने कहा, "परन्तु मैं तुम्हारा बच्चा नहीं हूं। मैं मर्द हूं। मैं जवान हूं। मैं तुमसे प्रेम करता हूं।"

महारानी बोली, "और मैं लड़कों और लड़कियों की मां हूं। और वे बच्चों के बाप हैं और बच्चियों की माएं हैं। और मेरे एक बेटे का बेटा तो आयु में तुमसे भी बड़ा है।"

नौजवान कवि ने दुहराया, "परन्तु मुझे तुमसे प्रेम है।"

इसके कुछ दिन पश्चात् महारानी का स्वर्गवास हो गया, परन्तु अपने अन्तिम श्वास को इस पृथ्वी के बड़े श्वास में खोकर गुम हो जाने से पहले ही वह अपने दिल ही दिल में कह रही थी, "मेरे लाल, मेरे प्रेमी, मेरे नौजवान कवि, हो सकता है कि हम फिर कभी मिलें और तब मेरी आयु सत्तर वर्ष की न हो।"

सत्य की खोज

दो आदमी एक साथ घाटी में घूम-फिर रहे थे। उनमें से एक ने पहाड़ की ओर संकेत करते हुए कहा, "वह सामने मठ देख रहे हो ? उसमें एक साधु रहता है, जिसने बहुत समय से संसार का त्याग कर रखा है। उसे केवल परमात्मा की खोज है और संसार की किसी वस्तु से उसे कोई राग नहीं।"

दूसरा आदमी बोला, "जब तक वह इस मठ और इस मठ के एकान्त को छोड़कर संसार में नहीं लौटता, सुख-दुःख में हमारा साथी नहीं बनता, खुशी के अवसरों पर नाचनेवालों के साथ मिलकर नाचने और मृत्यु के अवसरों पर रोनेवालों के साथ आंसू बहाने के लिए हममें नहीं आता, उसे परमात्मा नहीं मिल सकता।"

पहला आदमी यद्यपि हृदय से इस बात को स्वीकार कर चुका था, फिर भी कहने लगा, "तुमने जो कुछ भी कहा, मैं उससे सहमत हूं, किन्तु फिर भी यह मेरा विश्वास है कि साधु बहुत अच्छा आदमी है। और क्या यह अच्छा नहीं है कि एक भला आदमी सहस्रों ऐसे लोगों से दूर ही रहे जो अपने आपको भला समझते हैं ?"

नदी

कादसिया की तलहटी में, जहां एक बड़ी नदी बहती थी, दो छोटे-छोटे नाले आपस में मिलने पर यूं बातचीत करने लगे—

पहला नाला बोला, "कहो भई, तुम्हारा रास्ता कैसे कटा?"

दूसरे ने कहा, "भाई, मेरा रास्ता तो बहुत ही खराब था। पनचक्की का पहिया टूटा हुआ था और वह चक्की-वाला बूढ़ा मर चुका था जो मेरा रास्ता काटकर मुझे अपने खेतों में ले जाया करता था। मैं हाथ-पांव मारता, उन आदमियों के कीचड़ से अपने आपको बचाता हुआ चला आ रहा हूं, जो धूप में बैठे मक्खियां मारते रहते हैं। पर भाई, तुम्हारी राह कैसे कटी?"

पहला नाला बोला, "मेरा मार्ग सर्वथा भिन्न था। मैं पर्वतों पर से चिकनी, शर्मीली बेलों और सुगन्धित पुष्पों से खेलता चला आ रहा हूं। चांदी की कटोरियां भर-भरकर स्त्री-पुरुष मेरा पानी पीते थे और छोटे-छोटे बच्चे अपने गुलाबी पांव मेरे किनारे पंखालते थे। मेरी चारों ओर हंसी और सुरीले गीत थे। परन्तु खेद है कि तुम्हारा रास्ता सुखपूर्ण न था।"

"चलो, जल्दी चलो !" नदी चिल्लाई, "चलो, चुप-चाप बढ़े चलो, मुझमें समा जाओ ! हम समुद्र की तरफ जा रहे हैं। आओ, मेरी गोद में पहुंचकर तुम अपने सब क्लेश भूल जाओगे। खुशी और रंज की सब कहानियां स्वयमेव आपस में लय हो जाएंगी।"

"आओ, हम अपने मार्ग के सब क्लेश भूल जाएंगे। समुद्र में अपनी मां की गोद में पहुंचकर हम सब कुछ भूल जाएंगे।"

हर्ष और शोक

मई महीने के एक चमकीले प्रभात में हर्ष शोक से मिला। एक ने दूसरे की कुशल-क्षेम पूछी और फिर वे झील के स्थिर पानी के समीप बैठकर बातें करने लगे।

हर्ष दुनिया की सुन्दरताओं तथा उन आश्चर्यजनक वस्तुओं का जिक्र करता था, जिनसे जीवन वन में, पर्वतों पर और हरियालियों में दो-चार होता है और उन रसीले मधुर गीतों का जो दिन चढ़े और दिन ढले सुनाई देते हैं।

शोक ने हर्ष से जो कुछ सुना उसका समर्थन किया। वह अस्तित्व के जादू को भांप चुका था और उसके सौन्दर्य को भी।

और जब शोक ने पर्वतों और हरियालियों की बहार का जिक्र किया तो उसके वर्णन में बहुत प्रवाह था और वाणी में अत्यन्त आकर्षण।

बहुत देर तक शोक और हर्ष यूं ही एक साथ बैठे-बैठे बातें करते रहे।

एक जो कुछ कहता, दूसरा उससे पूरा-पूरा सहमत होता था। इसी समय झील के उधर दूसरे किनारे दो शिकारी जा रहे थे। जैसे ही उन्होंने इधर देखा तो एक बोला, "न जाने वे कौन हैं?"

दूसरा कहने लगा, "क्या कहा तुमने, दो? मुझे तो केवल एक दिखाई दे रहा है !"

पहले शिकारी ने कहा, "नहीं भई, दो हैं !"

दूसरा बोला, "मुझे तो केवल एक दिखाई दे रहा है। और झील में परछाईं भी तो केवल एक ही की दिखाई दे रही है।"

पहला कहता था, "नहीं, दो हैं ! और पानी में परछाईं भी दो ही की स्पष्ट दिखाई दे रही है।"

दूसरे का अब भी वही ख्याल था, "मैं तो केवल एक ही को देख रहा हूं।"

और पहला इस बात पर आग्रह कर रहा था कि वे तो स्पष्ट रूप से दो दिखाई दे रहे हैं।

आज तक एक शिकारी को यह शिकायत है कि उसके मित्र को एक के दो दिखाई देते हैं और दूसरा समझता है कि उसके साथी की दृष्टि अवश्य कुछ कमजोर हो गई है।

दूसरा आवारा

मैं एक बार एक नाविक से मिला। वह भी कुछ मजनू-सा ही था। वह मुझसे यूं कहने लगा—

"मैं तो एक आवारा हूं और प्रायः मुझे ऐसा अनुभव होता है जैसे कि मैं इस भूमि पर मनुष्यों में नहीं वरन् बौनों में चल-फिर रहा हूं। मेरा सिर इनकी अपेक्षा चूंकि सत्तर गज अधिक ऊंचा है, इसलिए इसमें इतने ही अधिक उच्च तथा इतने ही अधिक गहरे विचार पैदा होते हैं।

"और जो तुम सच पूछो, तो मैं मनुष्यों में नहीं वरन् मनुष्यों पर चलता हूं और वे अपने खुले तथा चौड़े खेतों में मेरे चरण-चिह्नों के सिवा और कुछ भी नहीं देख सकते।

"और प्रायः मैंने इन्हें अपने चरण-चिह्नों की असाधारण माप पर विवाद करते तथा झगड़ते सुना है, क्योंकि अधिकतम का यही विचार है कि यह किसी ऐसे देव के पांव के निशान हैं जिसका आज से शताब्दियों पहले कहीं इधर से रास्ता था।

"और कुछ कहते हैं, नहीं, इन गढ़ों में दूर चमकने-वाले तारों में से दुमदार तारे टूटकर गिरते रहे हैं।

"परन्तु ऐ मित्र! केवल एक तुम ही जानते हो कि ये सिवा एक आवारा के चरण-चिह्नों के और कुछ भी नहीं हैं।"

रेत पर

एक आदमी ने दूसरे आदमी से कहा, "बहुत समय हुआ, पूरे ज्वार के दिनों में मैंने अपनी लाठी की नोक से समुद्र के किनारे रेत पर कुछ लिखा था। लोग इसे पढ़ने के लिए अब भी थम जाते हैं। उन्हें यह चिन्ता रहती है कि कोई इसे मिटा न दे।"

दूसरा बोला, "भई, मैंने भी रेत पर कुछ लिखा तो था, किन्तु वह पूरे भाटे के उतार का समय था और अथाह समुद्र की बेरोक लहरें उसे अपने साथ बहाकर ले गईं। हां, पर बताओ तो तुमने क्या लिखा था ?"

पहले ने उत्तर दिया, "मैंने लिखा था; मैं वह हूं, जो है। और तुमने क्या लिखा था ?"

दूसरा बोला, "मैंने यह लिखा था; मैं तो इस अथाह समुद्र का एक बूंद मात्र हूं।"

आंसू और हंसी

नील नदी के किनारे सन्ध्या के धुन्धलके में एक लकड़बग्घा एक घड़ियाल से मिला। एक ने दूसरे को ठहरा लिया। अभिवादन के बाद लकड़बग्घे ने घड़ियाल से पूछा, "कहिए सरकार, कैसे गुजर रही है?"

घड़ियाल बोला, "क्या पूछते हो भाई! बुरी हालत है। यदि कभी दर्द के मारे आंखों में आंसू आ जाएं, तो देखनेवाले हंसी के मारे लोटपोट होकर कहते हैं कि यह घड़ियाली आंसू हैं। सच मानो, तो यह कष्ट असहनीय होता है।"

इसपर लकड़बग्घे ने कहा, "अरे भाई! तुम तो अपने ही दुःख का रोना रोते हो। यहां जरा मेरी दशा भी तो देखो! मैं संसार की सुन्दरताओं को देखता हूं, उसके चमत्कारों और उसकी अद्‌भुत बातों को सुनता हूं, तो मारे प्रसन्नता के बांछें खिल जाती हैं, ठीक वैसे ही जैसे उषा मुस्कराती है; तो ये दुनियावाले मेरी इस आनन्दपूर्ण हंसी पर भी हंसते हैं और कहने लगते हैं कि अरे, यह तो लकड़बग्घे की हंसी है!"

बिजली चमकती है

एक सन्ध्या को जोर की आंधी चल रही थी। एक पादरी अपने गिरजाघर में था। अन्य धर्मावलम्बी एक स्त्री वहां आई और उसके सामने खड़ी होकर बोली, "हे पूज्य पादरी ! मैं इसाई नहीं हूं, किन्तु क्या मेरे लिए भी नर्क की आग से बचाव का कोई उपाय है ?"

पादरी ने उसकी ओर बड़प्पन से देखा और कहा, "नहीं। निर्वाण केवल उनके लिए है, जिनकी आत्माएं परम पवित्र परमात्मा से सम्बन्ध स्थापित कर चुकी हैं।" जिस समय वह यह कह रहा था, भयंकर गर्जन के साथ आकाश से बिजली गिरी और गिरजे को भयंकर चिंगारियों में लपेट लिया।

शहर से लोग भागे आए। उन्होंने उस स्त्री को तो बचा लिया किन्तु पादरी जलकर राख हो चुका था।

अदला-बदली

एक बार किसी चौराहे पर एक निर्धन कवि एक धनवान मूर्ख से मिला।

वे देर तक खड़े एक दूसरे से बातें करते रहे। उनकी इस बातचीत से अपने जीवन के प्रति असन्तोष प्रकट होता था।

उसी समय स्वर्ग का एक देव इधर से गुजर रहा था। उसने दोनों को अपने परों की छाया के नीचे ले लिया। यह चमत्कार ही तो था कि दोनों के गुण-दोष परस्पर में बदल गए और उन्हें इसका पता तक भी न चला। और फिर वे एक दूसरे से अलग हो गए।

किन्तु आश्चर्य की बात है कि कवि फिर भी यह समझ रहा था कि अब उसके पल्ले सूखी रेत के सिवा कुछ नहीं रहा और मूर्ख आंखें बन्द करने पर भी केवल यही अनुभव करता था कि उसके हृदय पर बादल चल रहे हैं।

मोती

एक सीप ने दूसरी सीप से कहा, "मेरे पेट के भीतर दर्द है, बड़े जोर का दर्द ! बोझिल और गोल-सा। मैं बहुत ही कष्ट में हूं।"

दूसरी सीप ने बड़े घमण्ड से कहा, "परमात्मा को धन्यवाद है। मैं तो भीतर-बाहर से ठीकठाक हूं।

उसी समय एक केकड़ा, जो पास से जा रहा था और जिसने उन दोनों की बातें भी सुनी थीं, बोला, "हां, तुम भीतर-बाहर से ठीकठाक हो, किन्तु जो दर्द तुम्हारे पड़ोसी के है, वह एक अनमोल मोती का दर्द है।"

पूरा चांद

पूर्णिमा का चांद अपनी पूरी चमक-दमक के साथ निकला। नगर के सब कुत्तों ने चांद पर भौंकना आरम्भ कर दिया।

केवल एक कुत्ता चुप रहा। इसने बड़ी गम्भीरता से दूसरे कुत्तों से कहा, "शान्ति को उसकी नींद से न जगाओ और चांद को अपने शोर से भूमि पर न बुलाओ।"

दूसरे कुत्तों ने भौंकना बन्द कर दिया। डरावनी खामोशी छा गई। परन्तु वही उपदेशक कुत्ता सारी रात शान्ति का उपदेश देता हुआ भौंकता रहा।

प्रेम और घृणा

एक स्त्री ने पुरुष से कहा, "मुझे तुमसे प्रेम है।"

पुरुष बोला, "यह मेरी हार्दिक इच्छा है कि मैं तुम्हारे प्रेम के योग्य बन जाऊं।"

फिर स्त्री ने पुरुष से कहा, "तो क्या तुम्हें मुझसे प्रेम नहीं है?"

पुरुष ने केवल उसकी तरफ देखा और मौन रहा।

इसपर स्त्री ने चिल्लाना आरम्भ कर दिया, "मुझे तुमसे घृणा है, मैं तुमसे घृणा करती हूं।"

और पुरुष ने कहा, "तो फिर मेरी यह हार्दिक अभिलाषा है कि मैं तुम्हारी घृणा के योग्य बन जाऊं।"

परछाईं

जून के महीने का एक प्रभात था। घास अपने पड़ोसी बलूत वृक्ष की परछाईं से बोली, "तुम दाएं-बाएं झूल-झूलकर हमारे सुख को नष्ट करती हो।"

परछाईं बोली, "अरे भाई, मैं नहीं, मैं नहीं! जरा आकाश की ओर देखो तो। एक बहुत बड़ा वृक्ष है जो वायु के झोंकों के साथ पूर्व और पश्चिम की ओर सूर्य और भूमि के बीच झूलता रहता है।"

घास ने ऊपर देखा तो पहली बार उसने वह वृक्ष देखा। उसने अपने दिल में कहा, "घास! यह मुझसे भी लम्बी और ऊंची-ऊंची घास ही तो है।"

और घास चुप हो गई।

सपना

एक आदमी ने एक सपना देखा। जब उसकी आंख खुली तो अपने सपने का फल पूछने के लिए वह अपने ज्योतिषी के पास गया।

ज्योतिषी ने उससे कहा, "मेरे पास तुम जब ऐसे सपने का फल पूछने आओगे, जिसे तुमने जागते में देखा हो, तो उसका फल मैं तुम्हें बता सकूंगा परन्तु नींद के सपनों का न तो मेरे ज्ञान से कोई सम्बन्ध है, और न तुम्हारी कल्पना से।"

लाल धरती

एक वृक्ष ने एक आदमी से कहा, "मेरी जड़ें दूर नीचे लाल धरती में हैं। मैं तुम्हें अपना फल दूंगा।"

आदमी बोला, "कैसी समानता है हममें। मेरी जड़ें भी दूर लाल धरती में ही हैं। और यह भूमि तुम्हें शक्ति प्रदान करती है कि तुम हमपर अपने फल न्योछावर करो और हमें सिखाती है कि हम कृतज्ञतापूर्वक उन्हें स्वीकार करें।"